केंद्रीय विद्यालय चिकोड़ी

KENDRIYA VIDYALAYA CHIKODI

Vidyalaya e-Patrika

Session 2021-22

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय चिकोड़ी

Kendriya Vidyalaya Chikodi

विद्यालय पत्रिका सत्र: 2021-22

प्रमुख संरक्षक

श्री सिरिमाला सांबन्ना

उपायुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, बैंगलुरु संभाग

संरक्षक

डॉ. एन. वसंत
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
बैंगलुरु संभाग

श्री एम.जी. हिरेमठ, भा.प्र.से.
अध्यक्ष
विद्यालय प्रबन्ध समिति
केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

श्री जी.ए.नरसिम्हम
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
बैंगलुरु संभाग

श्री युकेश कुमार , भा.प्र.से.
सहायक आयुक्त एवं
नामित अध्यक्ष, वि.प्र.स.
केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

श्री पी.सी. राजू
सहायक आयुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
बैंगलुरु संभाग

श्री डी.के. मिश्रा
प्राचार्य प्रभारी
केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी

OUR PATRONS

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

SHRI SIRIMALA SAMBANNA
DEPUTY COMMISSIONER
KVS RO, BENGALURU

DR. N. VASANTH
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO, BENGALURU

SHRI G.A. NARASIMHAM
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO, BENGALURU

SHRI P.C. RAJU
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO, BENGALURU

उपायुक्त महोदय का सन्देश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

ಕೇಂದ್ರೀಯ ವಿದ್ಯಾಲಯ ಸಂಘಟನೆ (ಕ್ಷೇತ್ರೀಯ ಕಾರ್ಯಾಲಯ)
ಕೆ. ಕಾಮರಾಜ ರಸ್ತೆ, ಬೆಂಗಳೂರು-560 042
केंद्रीय विद्यालय संगठन (क्षेत्रीय कार्यालय)
के. कामराज मार्ग, बेंगलूरु - ५६००४२
Kendriya Vidyalaya Sangathan (Regional Office)
K. Kamraja Road, Bengaluru - 560042
(An Autonomous Body Under MOE , Government of India)
080-25543757 (DC)/ 080-25566360/ 25301227 (AC/AO)
Fax: 080-25578487/25514054
Website: www.robangalore.kvs.gov.in
Email: dcrobangalore@kvsedu.org/dcrobangalore@gmail.com

F.110353/KVS/RO/BGR/2021-22/ **दिनांक: 22.07.2021**

संदेश

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष की बात है कि **केन्द्रीय विद्यालय, चिक्कोड़ी,** सत्र 2021-22 के लिए विद्यालय **ई-पत्रिका एवं राजभाषा ई-पत्रिका** प्रकाशित करने जा रहा है।

विद्यालय **ई-पत्रिका एवं राजभाषा ई-पत्रिका** विद्यार्थियों में साहित्यिक, कलात्मक और पत्रकारीय क्षमता को विकसित करने का अवसर प्रदान करता है। यह उनमें विचार अभिव्यक्ति कौशल और रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करता है। यह विद्यालय के शिक्षण और शिक्षणेत्तर सहगामी क्रियाकलापों के गुणात्मक अभिवृद्धि का भी परिचायक होता है।

मैं विद्यालय **ई-पत्रिका एवं राजभाषा ई-पत्रिका** के सफलता और सार्थकता हेतु बधाई शुभकमानाएं देता हूँ और विद्यालय के प्राचार्य, समस्त कर्मचारी गण और विद्यार्थियों के प्रयास की सराहना करता हूँ, एवं अभिभावकों को भी हमारी ओर से बधाई एवं हार्दिक शुभकामनाये प्रदान करता हूँ।

धन्यवाद ,

जय हिंद

(सिरिमाला साबन्ना)
उपायुक्त
केविसं बेंगलरु

अध्यक्ष महोदय (के.वि. चिकोड़ी) का सन्देश

ಎಂ.ಜಿ.ಹಿರೇಮಠ ಭಾ.ಆ.ಸೇ.
M.G.HIREMATH I.A.S.

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ

ಜಿಲ್ಲಾಧಿಕಾರಿ ಹಾಗೂ ಜಿಲ್ಲಾ ದಂಡಾಧಿಕಾರಿ
ಬೆಳಗಾವಿ ಜಿಲ್ಲೆ, ಬೆಳಗಾವಿ-590001
Deputy Commissioner and
District Magistrate, Belagavi, Karnataka
Off : 0831-2407200 / 2407273 ,
Fax : 0831-2452644 Resi : 2407222
E-mail : deo.belagavi@gmail.com

सन्देश

नि:संदेह हर्ष एवं गौरव का विषय है कि केन्द्रीय विद्यालय, चिकोड़ी सत्र 2021-22 हेतु ई-**विद्यालय पत्रिका एवं राजभाषा पत्रिका** का प्रकाशन कर रहा है | वक्ता के कौशल को निखारने के लिए मंच का जितना महत्त्व होता है, उतना ही महत्त्व नव बाल साहित्यकारों के लिए विद्यालय पत्रिका का होता है |

बच्चे प्रतिभा के धनी तथा कल्पना शक्ति के स्रोत होते हैं | कल्पना के आलोक से उद्भासित विचार वल्लरी अपनी आभा से साहित्य जगत को आलोकित करती है, सृजनात्मक शक्ति ने कल्पना-प्रसूत विचारबीजों को अंकुरित कर शब्दों को आकार दिया, शब्दों ने कविता, कहानी एवं विचार प्रधान लेख का आकर ग्रहण किया | इन्हीं रचनाओं को प्रकाशित कर विद्यालय पत्रिका इन्हें चिरस्थाई बनाने का अनुपम कार्य करती है |

आशान्वित हूँ कि अपनी रचनाओं को विद्यालय पत्रिका में प्रकशित हुआ देखकर बाल मन हर्षित, पुलकित और उत्साहित होगा | ई-**विद्यालय पत्रिका एवं राजभाषा पत्रिका** के प्रकाशन हेतु सतत प्रयासरत प्राचार्य महोदय, सम्पादक मंडल एवं शिक्षकों को हार्दिक बधाइयाँ एवं धन्यवाद |

धन्यवाद !
जय हिन्द !

एम.जी.हिरेमठ, आई.ए.एस.
अध्यक्ष, वि.प्र.स,के.वि.चिकोड़ी एवं
जिलाधिकारी, जिला बेलगावी

सहायक आयुक्त महोदय का सन्देश

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

ಕೇಂದ್ರೀಯ ವಿದ್ಯಾಲಯ ಸಂಘಟನೆ (ಕ್ಷೇತ್ರೀಯ ಕಾರ್ಯಾಲಯ)
ಕೆ. ಕಾಮರಾಜ ರಸ್ತೆ, ಬೆಂಗಳೂರು-560 042
केंद्रीय विद्यालय संगठन (क्षेत्रीय कार्यालय)
के. कामराज मार्ग, बेंगलूरु - ५६००४२
Kendriya Vidyalaya Sangathan (Regional Office)
K. Kamraja Road, Bengaluru - 560042
(An Autonomous Body Under MOE, Government of India)
080-25543757 (DC)/ 080-25566360/ 25301227 (AC/AO)
Fax: 080-25578487/25514054
Website: www.robangalore.kvs.gov.in
Email: dcrobangalore@kvsedu.org/dcrobangalore@gmail.com

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केंद्रीय विद्यालय, चिकोड़ी अपनी 'ई-विद्यालय पत्रिका एवं राजभाषा पत्रिका' वर्ष 2021-22 का प्रकाशन करने जा रहा है| विद्यालय पत्रिका एक शैक्षणिक वर्ष की गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण है, जिसके माध्यम से विद्यालय की विशेषताओं एवं उपलब्धियों को जानने का अवसर मिलता है ।

पत्रिका के संपादन में विद्यालय के कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है| इसमें प्रकाशित होने वाले लेख, कविता, कहानी तथा अन्य रोचक रचनाओं का समावेश विद्यालय के छात्रों और शिक्षकों द्वारा किया जाता है| अत: बच्चों की प्रतिभा को निखारने का यह एक अच्छा माध्यम है|

मैं, पत्रिका के सम्पादन से जुड़े प्रभारी प्राचार्य, शिक्षकों एवं विशेषरूप से छात्रों को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनके अथक प्रयासों से ई-विद्यालय पत्रिका एवं राजभाषा पत्रिका का सफल प्रकाशन संभव हो पा रहा है । मुझे पूर्ण आशा है कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन के अनुरूप विद्यालय के सभी पाठ्यसहगामी क्रियाओं का यह ई-विद्यालय पत्रिका एवं राजभाषा पत्रिका एक प्रतिदर्श दस्तावेज सिद्ध होगी ।

धन्यवाद
जय हिन्द !

जी.ए. नरसिम्हम

(जी.ए. नरसिम्हम)
सहायक आयुक्त
के.वि.सं, बेंगलुरु संभाग

नामित अध्यक्ष महोदय (के.वि. चिकोड़ी) का सन्देश

ಶ್ರೀ ಯುಕೇಶ್ ಕುಮಾರ್ ಎಸ್. ಭಾ.ಆ.ಸೇ
ಉಪವಿಭಾಗಾಧಿಕಾರಿಗಳು ಹಾಗೂ
ಉಪವಿಭಾಗದ ದಂಡಾಧಿಕಾರಿಗಳು
ಚಿಕ್ಕೋಡಿ

ಕರ್ನಾಟಕ ಸರ್ಕಾರ
Government Of Karnataka

Shri.Ukesh Kumar S. IAS
Assistant Commissioner &
Sub Divisional Magistrate Chikodi

No/KV/NCL/2021-22

Date: 9/08/2021

:MESSAGE:

Education aims at the holistic development of the child. Creative writing is an integral part of learning. The school magazine plays a vital role in providing an opportunity of expression to the creative minds and represents aspirations of the children.

With the world becoming more and more digital, people have moved to internet for almost every form of knowledge sharing. In the changing times, it gives me immense pleasure to launch **the E-Magazine for the session 2021-22 for Kendriya Vidyalaya, Chikodi**.

The platform provided by this magazine will definitely become a stepping stone in developing the personalities and realising the dreams of our beloved children.

I congratulate the Principal, teachers and students who have immensely contributed to this magazine and wish them very best for their future endeavors.

Ukesh Kumar S. IAS
Chairman Nominee, VMC KV
Asst. Commissioner & SDM, Chikodi

प्राचार्य महोदय का सन्देश

☎ 08338-273777/273477

ಕೇಂದ್ರೀಯ ವಿದ್ಯಾಲಯ, ಚಿಕ್ಕೋಡಿ-೫೯೧೨೦೧
केंद्रीय विद्यालय, चिकोडी-591201
KENDRIYA VIDYALAYA, MLA GOVT MODEL SCHOOL BUILDING CHIKODI-591201
E-mail:-kvchikodi@gmail.com website:-https//:chikodi.kvs.ac.in

K V Code: 2301	Station Code:789	Region Code:02	Zone Code:05
Zone: South	CBSE Affiliation No. 800045	DISE Code 29300518310	

सन्देश !

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ |
मैं बावरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ ||

ऐसा ही कुछ प्रयास इस पत्रिका के माध्यम से मोतियों जैसी विलक्षण प्रतिभाओं को ढूँढ़ने का किया गया है और भविष्य में प्रतिभाओं को पल्लवित एवं पुष्पित होने के लिए प्रोत्साहित भी किया गया है | प्रयास रहा है कि अनछुए पहलुओं को मुख्य धारा मैं समाहित किया जाए | आशा है विधाओं का मेल एवं भाषाओं का संगम पाठकों के लिए आकर्षण का प्रमुख कारण सिद्ध होगा |

मैं हृदय की गहराइयों से जिलाधीश, बेलगावी एवं विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष परम आदरणीय **श्री एम. जी. हिरेमठ, भा.प्र.से.** तथा आदरणीय सहायक आयुक्त एवं विद्यालय प्रबंध समिति के नामित अध्यक्ष **श्री युकेश कुमार, भा.प्र.से.** का धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनका सहयोग एवं मार्गदर्शन हमें सदैव मिलता रहा है |

मैं हृदयंगम भावनाओं से केन्द्रीय विद्यालय संगठन, बेंगलुरु संभाग के परम सम्मानीय उपायुक्त महोदय, **श्री सिरिमाला साबन्ना जी** तथा माननीय सहायक आयुक्त **डॉ. एन. बसंत जी, श्री नरसिम्हम जी एवं श्री पी.सी.राजू जी** को सहर्ष धन्यवाद देता हूँ जिनके सतत निर्देशन एवं सहयोग से केन्द्रीय विद्यालय, चिकोड़ी **ई-विद्यालय पत्रिका** का संपादन करने में सफल रहा है |

मैं अंत में प्रतिभावान छात्र-छात्राओं, विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं पत्रिका सम्पादन समिति के सदस्यों को नियत समय पर पत्रिका प्रकाशन हेतु धन्यवाद देता हूँ |

जय हिन्द !
धन्यवाद !

डी.के. मिश्रा
प्राचार्य प्रभारी
केन्द्रीय विद्यालय, चिकोड़ी

संपादक की कलम से

विचारों के प्रकाश से गुंफित,
ज्ञान के आकाश तक विस्तृत |
छात्रों की प्रतिभा से चित्रित,
'विद्यालय पत्रिका है' गाथा समुचित |

प्रिय पाठकों,

यह विद्यालय ई-पत्रिका आप सभी पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है | ई-विद्यालय पत्रिका का यह नवीन अंक छात्रों की क्षमताओं,योग्यताओं को उभार कर उनमें अंतर्निहित मौलिक गुणों को बाहर निकालकर आप तक पुनः प्रस्तुत है | छात्रों की उन्मुक्तता, उनके विकास, हास-परिहास, आंतरिक सृजन,एकांत गुणों का नवीन चिंतन, बाल मन के विश्वास, आशा और अनुराग की जीवंत अभिव्यक्ति का चित्रण है यह पत्रिका |

रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था कि हमारी अभिलाषाएँ जीवन रूपी भाप को इन्द्रधनुष के रंग देती है | जीवन की इसी रसात्मक अभिव्यक्ति का नाम साहित्य है | जिसमें मानवीय संस्कृति, मूल्यों, सभ्यता एवं व्यक्तित्व की प्रस्तुति है | जिस तरह इन्द्रधनुष की सतरंगी आभा विस्मित एवं चकित करती है उसी तरह नवसृजनकर्त्ताओं की साहित्यिक कृतियों का यह सतरंगी अंक लेखों, कविताओं, कहानियों के नवसृजन से मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं से निश्चित ही पाठकों का मन मोह लेगा |

विद्यालय पत्रिका के प्रकाशन के सहयोग के लिए तमाम प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष हाथों का आभार | आगामी वर्ष में नवीन प्रयोगों,रचनाओं व विचारों के साथ मिलने की आस में .....

प्रधान संपादक
सोहन लाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)

संपादक मण्डल

श्री सोहन लाल प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिन्दी	हिन्दी विभाग
श्री पुष्पेन्द्र बेनीवाल प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक संस्कृत	संस्कृत विभाग
श्री राजेश अशोक पटले प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक अंग्रेजी	अंग्रेजी विभाग
श्रीमती महक महाजन प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक अंग्रेजी	अंग्रेजी विभाग
श्री सुरेन्द्र कुमार प्राथमिक शिक्षक	चित्रकला विभाग
श्री सोहन लाल प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिन्दी	डिज़ाइन एवं संग्रंथन

ABOUT VIDYALAYA

- KendriyaVidyalayaChikodi was established on 22nd June 2015 and is known among the premier educational institutions in the city. K V Chikodi is located in the heart of the city. Nestling among the hillocks and sylvan surroundings,
- Besides providing high class environment to students with the help of experienced and caring teachers, it gives opportunity to excel in the field of academics, sports, co-curricular activities, scouts- guides, inter school competitions etc.

SCHOOL ACHIEVEMENT 2020-21

OUR VIDHARTHI VIGYAN MANTHAN (VVM) ACHIEVERS -2020

Miss. LAXMI SANTOSH KONNURI
(Class X)
Rank 1, (Belgaum District)

Miss.SHRADDHA R GANACHARYA
(Class X)
Rank 3, (Belgaum District)

Miss. SPOORTI SADASHIV KUMBAR
(Class IX)
Rank 3, (Belgaum District)

Miss.BHAKTI SHIVAKUMAR HANJI
(Class IX)
Rank 3, (Belgaum District)

परीक्षा परिणाम सत्र : 2020-21

SCHOOL LEVEL EXAMS		Session 2020-21
Class	No. of Students	Pass %
I	78	100
II	82	100
III	85	100
IV	84	100
V	88	100
VI	87	100
VII	84	100
VIII	76	100
IX	77	100
BOARD (CBSE) LEVEL EXAMS		Session 2020-21
X	43	100

HIGH ACHIEVERS - CLASS Xth (ACADEMIC YEAR: 2020-21)

Miss.LAXMI S. KONNURI

Miss. BHAKTI BHOSALE

Miss. TANVI P.N.

Miss. SHRADDHA GANACHARYA

Miss.SHRUNGA CHAJAGANNAVAR

INSPIRE-MANAK AWARD 2020-21

कुमारी स्पूर्ति सदाशिव कुम्भार

नवीं कक्षा

वाद-विवाद प्रतियोगिता

पारस , नवीं कक्षा

के. वि. स. द्वारा आयोजित 'स्कूली शिक्षा बनाम ऑनलाइन शिक्षा' वाद- विवाद प्रतियोगिता में कलस्टर लेवल पर प्रथम स्थान प्राप्त करके संभाग स्तर पर सहभागिता निभाई |

E.B.S.B ACTVITIES OF PARTNERING STATE UTTARAKHAND

Uttarakhand folk song by Nisarga Praveenkumar Patil
CLASS – X 'A'

Proverbs in Kumaoni language by Shraddha V. Gore
CLASS – X 'A'

Quiz on Partnering state Uttarkhand by Paras Dada Koganole, CLASS – X 'B'

News on Partnering state Uttarakhand by Swati Ravindra Bhirade , CLASS – IX 'B'

Pledge on Water saving by Spoorti Sadashiv Kumbar, CLASS – X'A'

Pledge on swachhata by Bhakt S. Hanji, CLASS – X 'A'

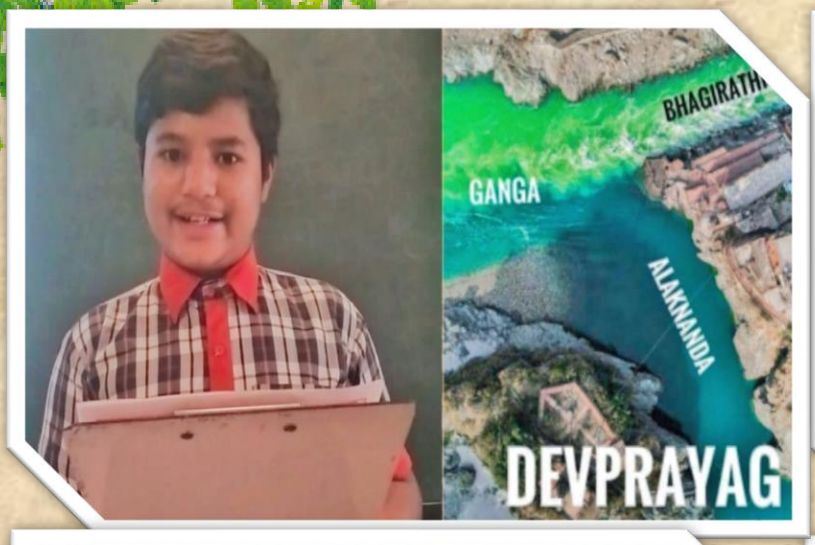
BHAGIRATHI
GANGA
ALAKNANDA
DEVPRAYAG

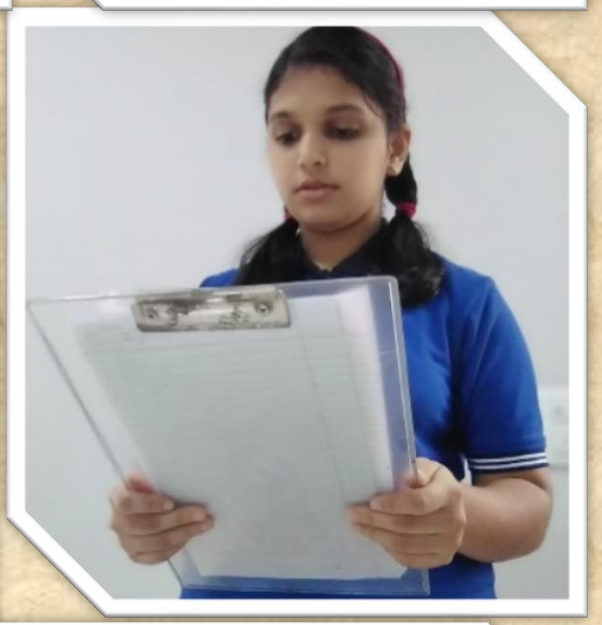

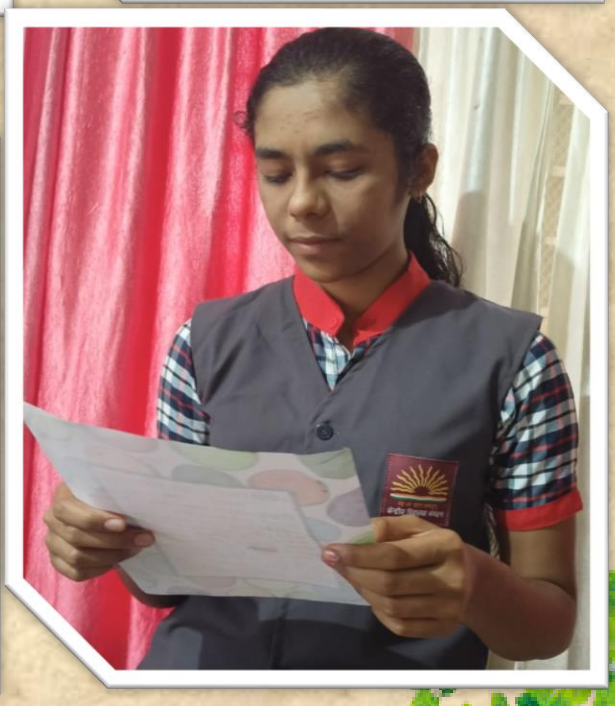

I# Cheer4India

फिट इण्डिया सप्ताह

KENDRIYA VIDYALAYA CHIKODI
CELEBRATES
FIT INDIA SCHOOL WEEK
FIT INDIA SCHOOL
FIT INDIA
For Better Life
FITNESS KA DOSE, AADHA GHANTA ROZ
DATE: 09 to 11 Dec 2020 & 14 to 16 Dec 2020

Fit India Sc

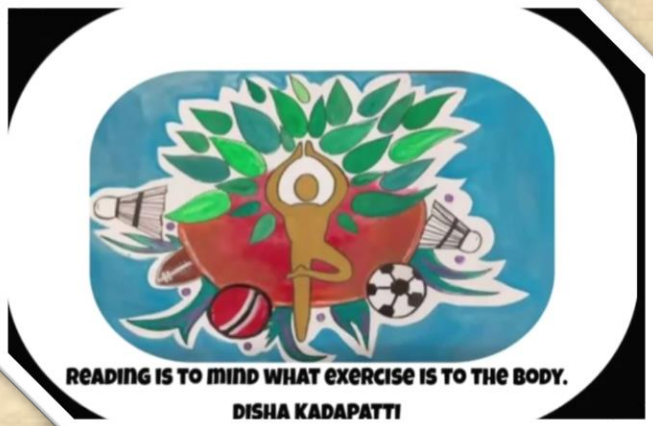
READING IS TO MIND WHAT EXERCISE IS TO THE BODY.
DISHA KADAPATTI

Fit Indi

on By Students Of KV Chikodi

FITNESS WEEK CELEBRATION
FIT INDIA
MENTAL
Fitness
Paras IX'B'
Kendriya Vidyalaya Chikodi

KENDRIYA VIDYALAY
CHIKODI
TITLE
BRAIN GAME
5X5
NAME SAMEEKSHA TOTIGER
CLASS IV th A
ROLL NO-14

योग दिवस

KENDRIYA VIDYALAYA CHIKODI

INTERNATIONAL DAY
OF YOGA
CELEBRATION-21-6-21

OF YOGA
CELEBRATION-21-6-21

केन्द्रीय विद्यालय चिकोड़ी का नया विद्यालय परिसर

Observation of Online classes by Principal

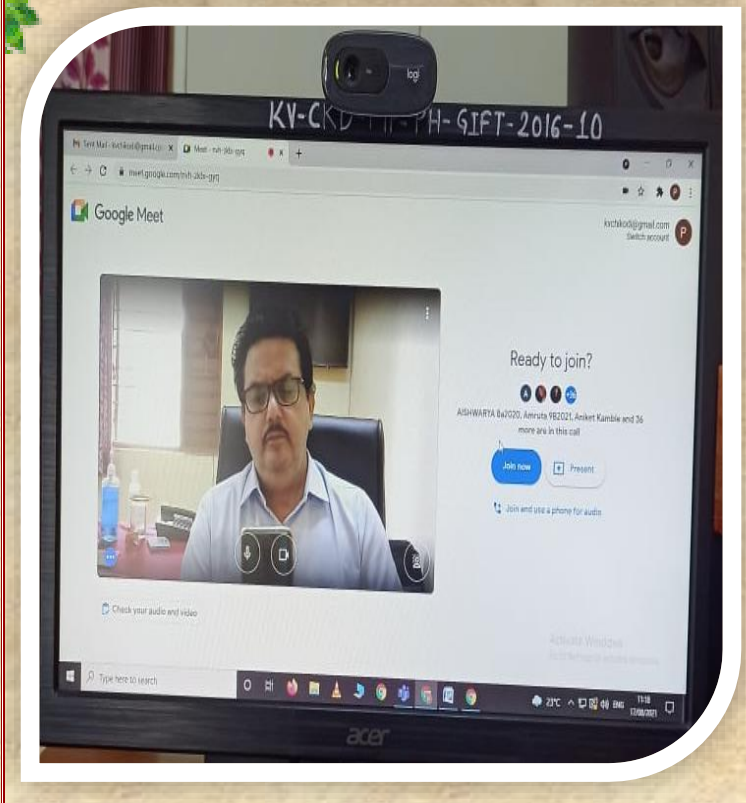

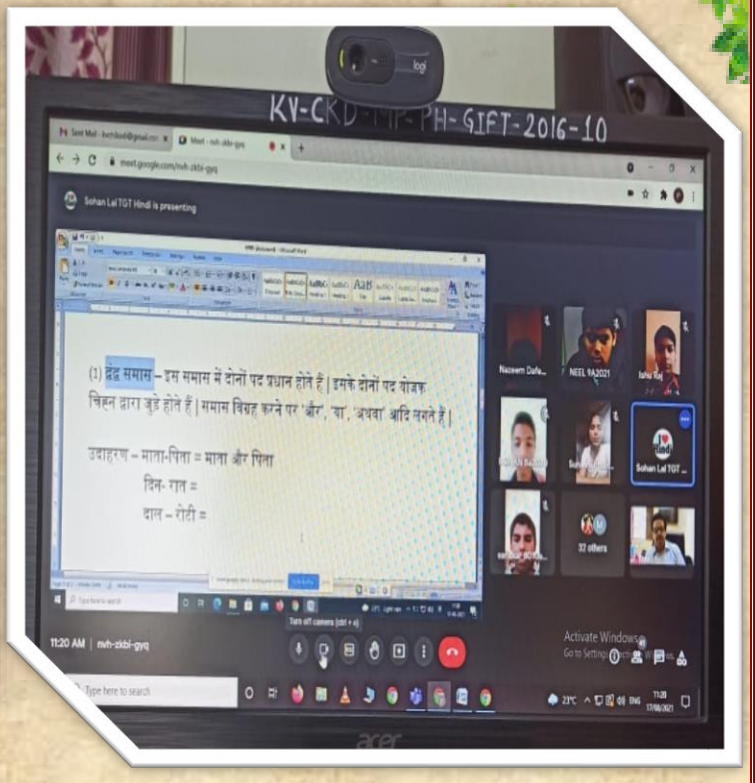

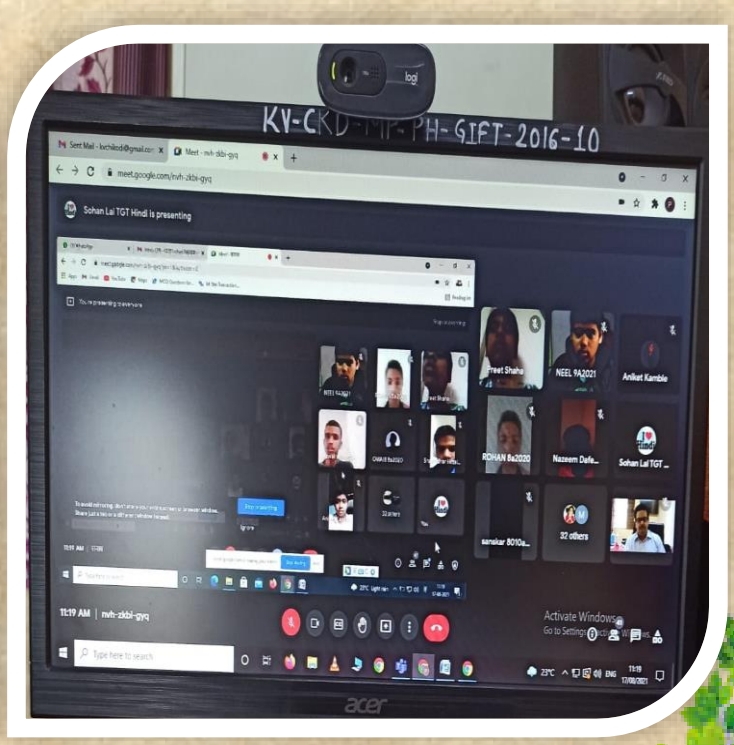

ONLINE SCIENCE CLASSES ON GOOGLE MEET

STUDENTS' RESPONSES IN ONLINE CLASSES

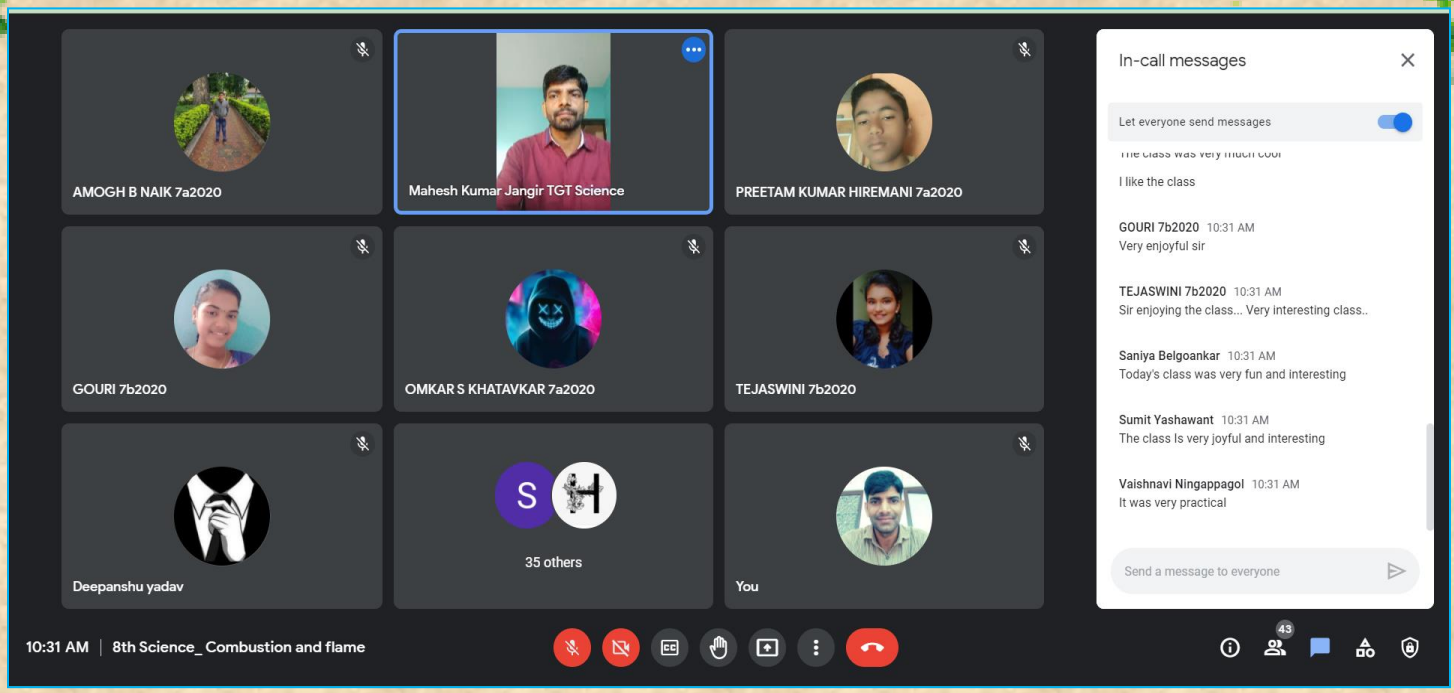

8TH ARTIFICIAL INTELLIGENT ONLINE CLASS

STUDENTS' RESPONSES

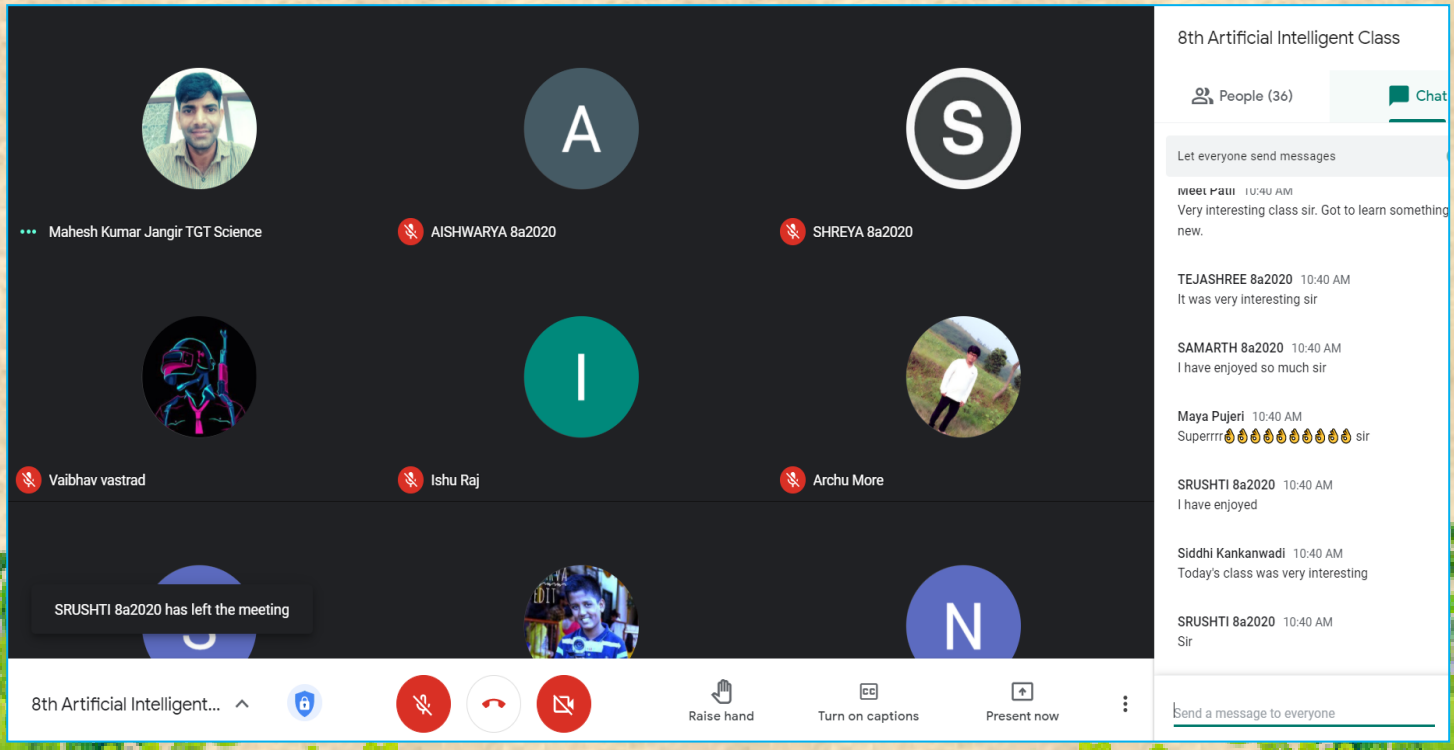

VIRTUAL SCIENCE EXHIBITION 2020

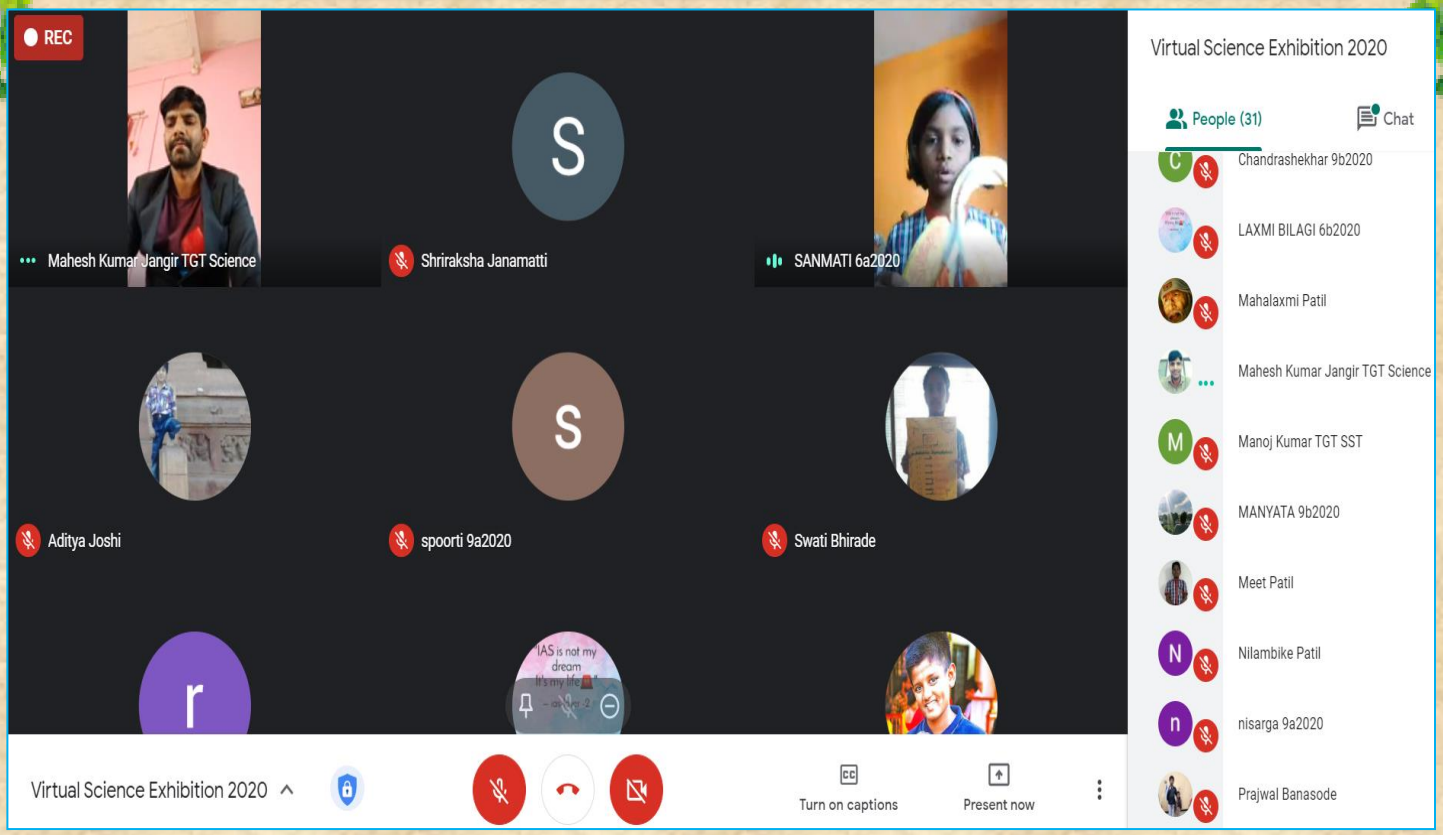

हिन्दी विषय ऑनलाइन शिक्षण

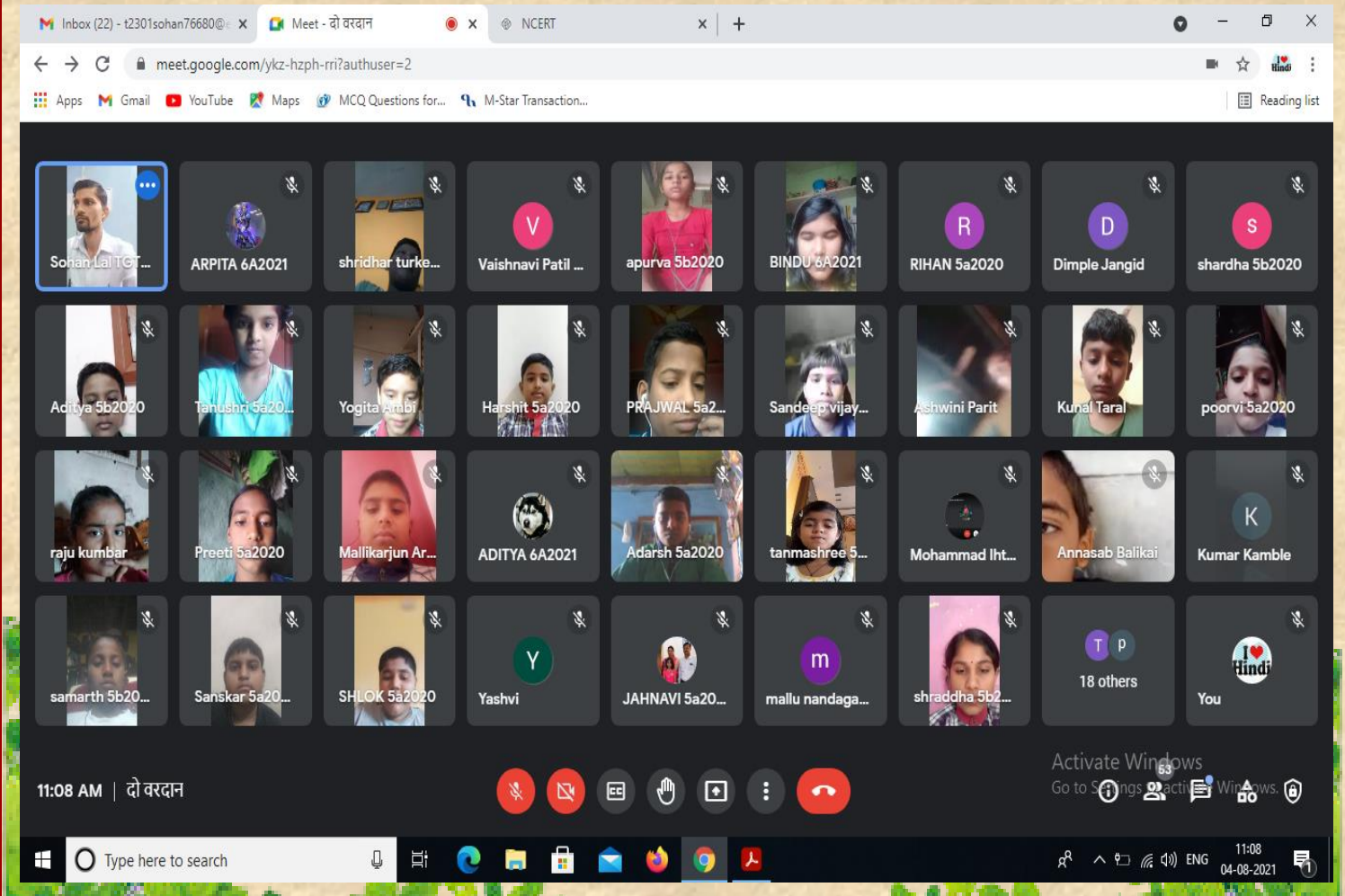

एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला

हिन्दी टंकण परीक्षा

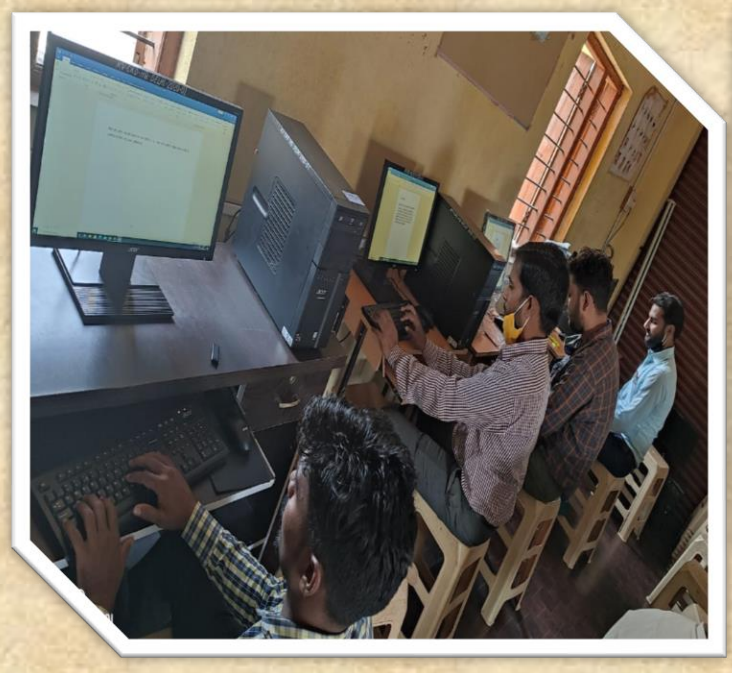

कार्यशाला की कक्षा

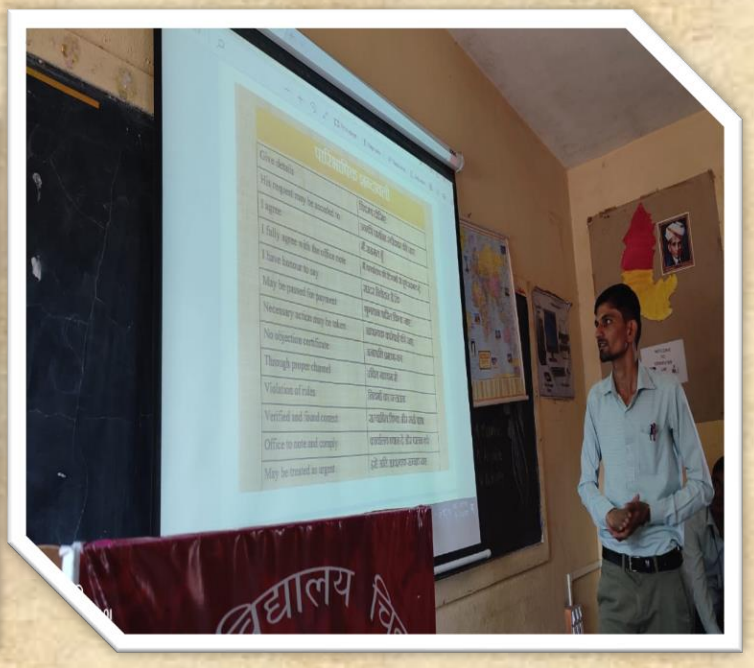

उद्बोधन

कार्यशाला सहभागी

कार्यानुभव विषय (WE) ऑनलाइन शिक्षण

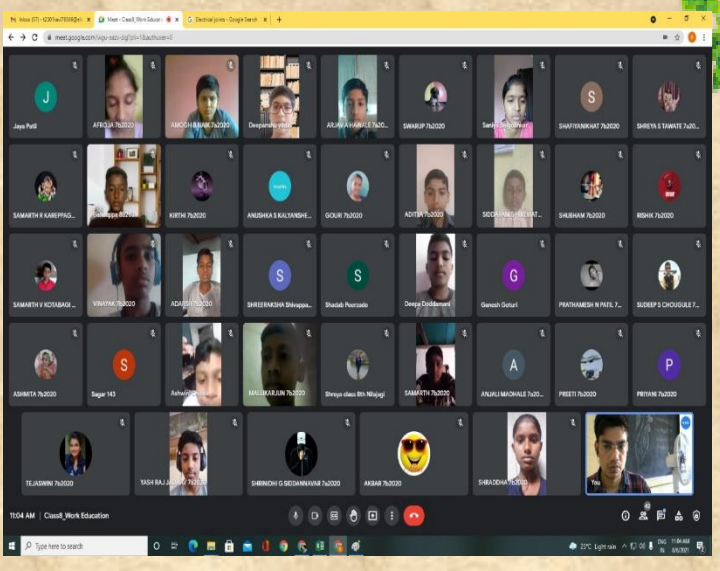

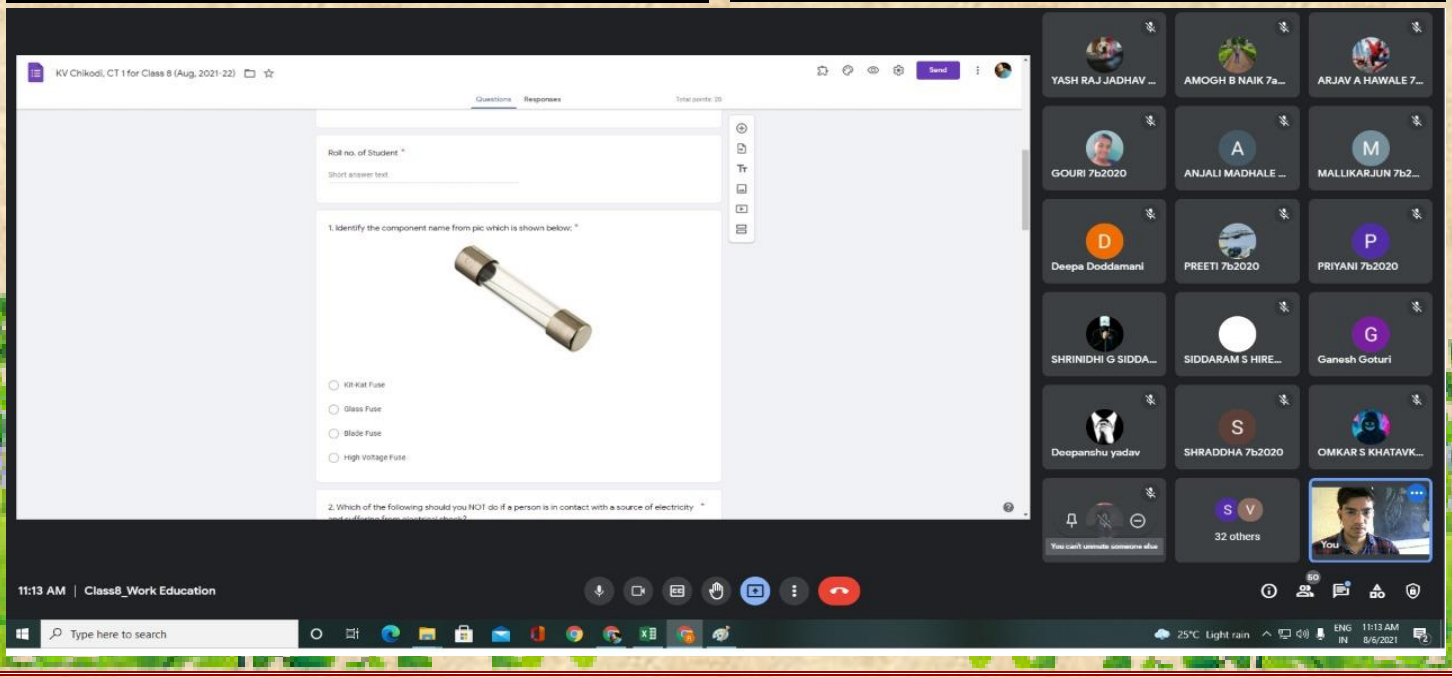

A VIRTUAL CLASS ROOM FOR LEARNING MUSIC

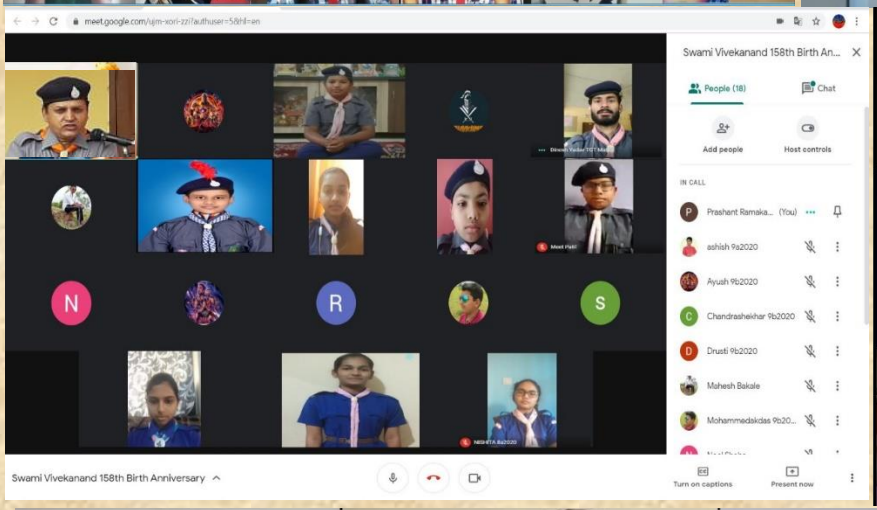

GOLDON ARROW BADGE REGISTRATION - 2021

VINIT

ABHINAV

SAMARTH

NETRA

SANVI

PARVATHY

हिन्दी विभाग

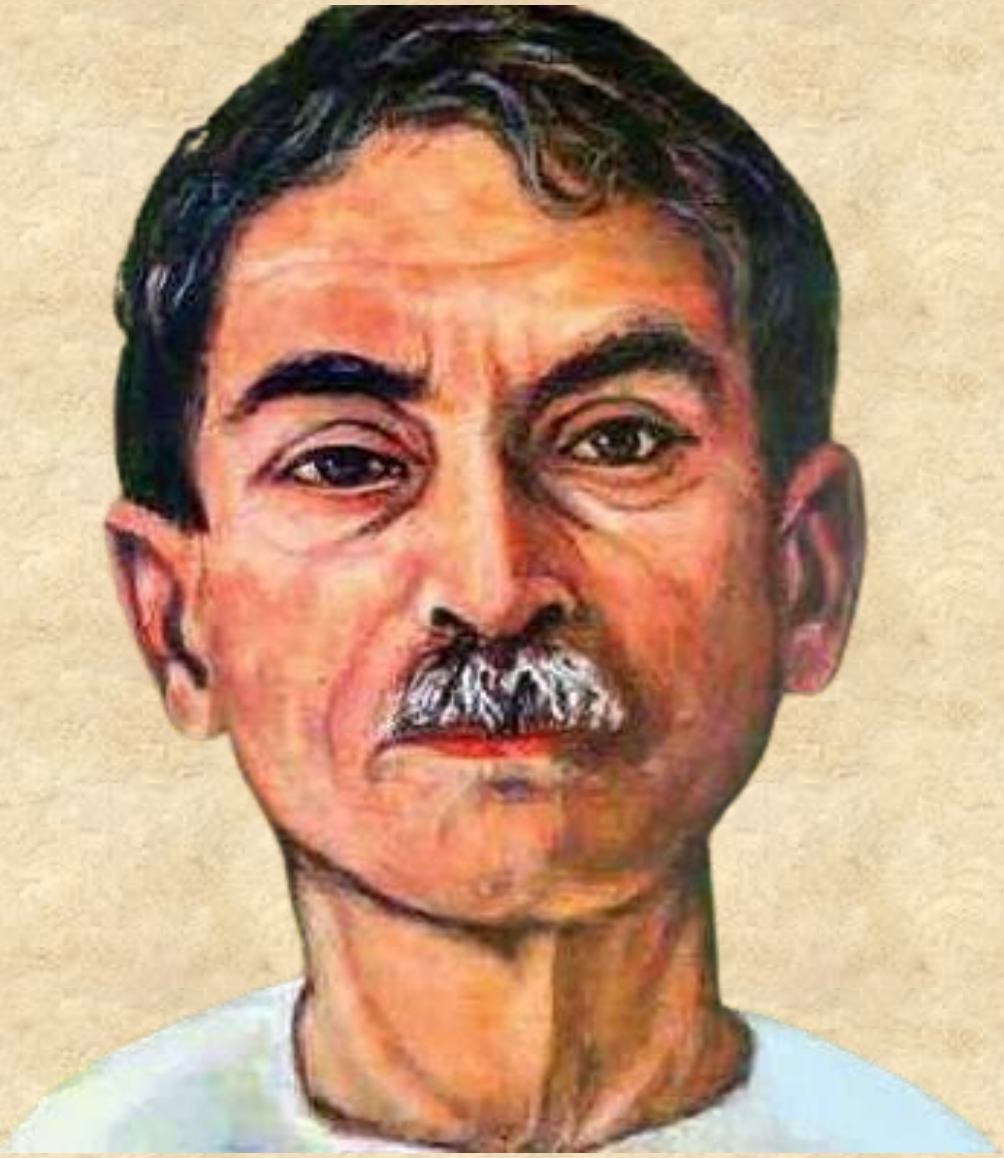

ये बच्चे नन्द–कुमार से (कविता)

सरस्वती के प्रांगण में,
ये बच्चे नन्द–कुमार से।
छोटे–छोटे थैलों वाले,
आते हैं लाड–दुलार से।।

प्रांगण में ये चहक हैं उठते,
बाल–पुष्प जैसे महक हैं उठते।
प्रात वन्दना में ये शिशुगण,
उठते राग अलापते।।
ये बच्चे नन्द–कुमार से.....

जब क्रीडांगण में ये बालक,
आते उत्स मनावते।
तरू–पवन–नभ और दिवाकर,
नचते गाते चाब से।।
ये बच्चे नन्द–कुमार से.....

सेवारथ जब हो विदा यहाँ से,
होते तर भाव–विभोर से।
लेते जब अंतिम विदा यहाँ से,
गुरुगण के चरण पखारते।।
ये बच्चे नन्द–कुमार से.....

पुष्पेन्द्र बेनीवाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक(संस्कृत)

देहाती दुनिया

शहर की दुनिया को छोड़ मुझे गाँव जाने दो।
इस अजनबी भीड़ को छोड़ अपनों के पास जाने दो।
जहाँ रहता है देश का कर्णधार, पालनहार,
मेरा जी करता है उनसे मिलने को बार-बार।

कितना खेलते , कूदते थे गाँव के चौगानों में ,
जिंदगी कैद हो गई है अब शहर के अट्टारी मकानों में।
बेपटरी दौड़ती जिंदगी से हो गया हूँ परेशान मैं,
फिर भी पटरी पर दौड़ रहा हूँ अकेला गुमनाम मैं।

जहाँ चलती है हवाएँ बादलों को चूम-चूमकर,
जी वहीं जाने को कर रहा है झूम-झूमकर।
अब पंखों की गर्म हवा से वो झोपड़ा याद आता है,
शहर में श्वांस रूकती है तो गाँव याद आता है।

ट्रैफिक जाम में चारों और फँसे जा रहा हूँ मैं,
ऐसा लग रहा है कि पागलखाने में जा रहा हूँ मैं।
पगडण्डी पर अनवरत चलने को जी कह रहा है,
सोते-जागते भी नादान-सा मन वहीं घूम रहा है।

सुबह - शाम लेता था बड़े बूढ़ों का आशीर्वाद,
अब हाय - हेल्लो से दिन गुजार लेता हूँ।
आज भी खूब आती है देहाती दुनिया की याद,
फिर भी सिरफिरे मन को मार लेता हूँ।

सोहन लाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक(हिन्दी)

कोरोना की मार

सन 2020(दो हजार बीस) में ईश्वर/कुदरत ने किया कैसा ये प्रहार ?
बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, पड़ी सब पर कोरोना की मार।

सबसे पहले चीन, जाने कहाँ से ये 'वायरस' लाया ?
'कोविड-19' बोल के, सन 2020 में विश्वभर में आतंक फ़ैलाया।

धीरे धीरे ही सही, कोविड-19 विषाणू ने भारत मे भी अपना विस्तार किया।
कई महीने के बाद, भारत ने भी कोरोना जानलेना है यह स्वीकार किया।

एक शिक्षक के नाते, इसका हमपर भी दूरगामी परिणाम हुआ।
लॉक डाउन, आइसोलेशन, क्वारन्टीन, वर्क फ्रॉम होम जैसे नए नए संबोधो से मेलमिलाप हुआ।

विद्यालय को लग गए ताले (सिर्फ छात्रों के लिए..)
छात्र हो गए घर मे क़ैद।
बिना मास्क के बाहर जाना, माना जाने लगा अवैध।

अब शिक्षण, पढ़ाई, दीक्षा, कैसे हो छात्रों की..?
पड गए सबके माथे पर बल।

लेकिन जल्द ही 'केंद्रीय विद्यालय संघटन' ने ढूंढ़ निकाला इसका हल।
बच्चे पढेंगे अब ऑनलाइन,
पढ़ाई को नही होने देंगे साइड लाइन।

तब से हर दिन अब, ऑनलाइन ही कक्षायें होती है।
पढ़ाना ऑनलाइन, समझाना ऑनलाइन, ऑनलाइन ही परीक्षाएं होती है।

इस कोरोना काल में भी, बच्चों से मिल रहा है अपार स्नेह और सहयोग।
दिखते तो हर दिन दुरभाष पटल पर।
फिर भी न जाने कैसा है ये वियोग..?

इस 'ऑनलाइन शिक्षण' से हो रहा समय का सदुपयोग।
धन्यवाद केंद्रीय विद्यालय संघटन, किया जिन्होंने ये 'ऑनलाइन शिक्षा' का अभिनव प्रयोग।

राजेश अशोक पटले
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक(अंग्रेजी)

' चलते - चलते '

चहूँ दिशा में सब बिखरा सा,
ना जाने हमने क्या समेटा,
आज भी बीता कल बितेगा,
इस धरा पर सब तिनका सा,
डगर - डगर में तितर - बितर है,
चलते - चलते सब दिख जाता,
चलते - चलते सब मिल जाता।

एक अंश तनिक हम जान ना पाए,
तो क्या जहां पर काबू पाए,
सब बस अपना बिगुल बजाते,
जीवन का मर्म जान ना पाते,
चलते - चलते सब रह जाता,
कुछ किसी के हाथ ना आता,
चलते - चलते सब मिट जाता,
बंद करे हम क्या मुट्ठी में,
कल को किसने पास से देखा,
तो क्या नश्वर का लेखा जोखा,
चलते - चलते सब रह जाता,
चलते - चलते सब मिल जाता।

रिसव कुमार टंडन
प्राथमिक शिक्षक

एक मौका

एक मौका दे दो मुझको भी, जीवन में आगे बढ़ना है |
सात समुद्र पार जाकर मुझे अंधकारों से भी लड़ना है ||
एक मौका दे दो मुझको भी,मेरी भी कुछ अभिलाषा है |
जीवन की कुछ उम्मीदें और कुछ कर पाने की आशा है ||

एक मौका दे दो मुझको भी,कुरीतियों से लड़ना है |
समानता और सशक्तिकरण का प्रचार मुझको करना है ||
एक मौका दे दो मुझको भी,तो क्या हुआ मैं नारी हूँ |
तुम थामो बस एक पल हाथ मेरा फिर देखो कितनों पर भारी हूँ ||

एक मौका दे दो मुझको भी,अब समय परिवर्तन का आया है |
नारी जीवन के उत्थान का गीत तो अब महापुरुषों ने भी गाया हैं ||
एक मौका दे दो मुझको भी,फिर न मैं कुछ चाहूँगी |
तुम सबकी महानता के गुण सदियों तक मैं गाऊँगी ||

एक मौका दे दो मुझको भी,बस एक मौके की तलाश मुझे |

इस सुंदर सी सृष्टि में नहीं, बनना चलती फिरती लाश मुझे ||
एक मौका दे दो मुझको भी.....

विकास
प्राथमिक शिक्षक

व्यक्ति पहले आया था, सिक्का बाद में, क्रमागत उन्नति का नियम कहता

कि सिक्के ढलने थे

व्यक्ति-अनुरूप, एक-मुखी,

पर अस्तित्व में था एक दूसरा नियम भी,

धात्वीय चुंबकत्व,

नियम नियम को काटते गये, और व्यक्ति सिक्कों सा ढलता

गया, द्वि-मुखी!

रोहित चौधरी
प्राथमिक शिक्षक

मेरी कविता

आज कक्षा में यह नोटिस आया,
मैडम ने यह फरमाया।
झट-पट से एक कविता लिखा ला,
विद्यालय पत्रिका में उसको छपवा।

मुझको कविता लिखना नहीं है आता,
सोच-सोच कर मन पछताया।
घर जाकर पापा को पकड़ा,
शोर मचाया कर लिया झगड़ा।

पास बैठाकर उनसे बोला,
मुझे लिखवा दो एक कविता।
उसको लेकर दौड़ा आया
मैडम को जल्दी दिखलाया।

उसे देखकर सब हर्षाए,
सबको मेरा गीत सुनाए।
लिख नहीं सकता, फिर लिख लाया,
मैडम ने भी लाड़ लड़ाया।

इशुराज
कक्षा - नवीं 'ब'

परीक्षा आई

मार्च महीना जब-जब आया |
अपने साथ परीक्षा लाया |
टाइम टेबल बच्चे पाते |
घर में आके शोर मचाते ||

मैडम को दोषी ठहराते,
दिन भर करते हाथा-पाई |
कहते नहीं होती पढाई
जैस-तैसे जाग जागकर ||

इधर-उधर से भाग भागकर
पुस्तकों के कीड़े बन जाते |
दो दिन में ही सब रट जाते
पेपर करते आधे सोकर ||

थके थके से आड़े होकर
परीक्षा से छुटकारा पाकर
क्या गलत है सब भूल जाते
मार्च का पहला दिन जब आता
मन फिर रह-रहकर घबराता
जैसे-तैसे रिजल्ट वे पाते
खुश होते और घर को जाते||

अद्विका गुरव
कक्षा: दसवी 'ब'

मेरा केंद्रीय विद्यालय

तू ही है हम सबकी शान,

तुझ पर है हम सब कुर्बान,

तेरा सब करते गुणगान,

तेरा सब करते सम्मान,

सबसे अच्छा सबसे प्यारा,

ऐसा है विद्यालय हमारा।

केंद्रीय विद्यालय तुझे प्रणाम,

तू ही है हम सबकी शान।

शिक्षक यहाँ के बड़े बुद्धिमान,

जो देते हैं हमको ज्ञान।

प्राचार्य यहाँ की बड़ी उदार,

जो रखती है हमारा ख्याल।

यहाँ से पढ़कर हम बने महान,

कहलाएंगे अच्छे इंसान,

केंद्रीय विद्यालय ,तुझे प्रणाम,

तू ही है हम सबकी शान।

स्पूर्ति मनगूली

कक्षा-चौथी 'अ'

आओ मिलकर पेड़ लगाए

आओ मिलकर पेड़ लगायें
आओ मिलकर पेड़ लगायें
हरा भरा ये देश बनायें
वातावरण को स्वच्छ बनायें |
इस जीवन को स्वस्थ बनायें
पेड़ को कोई काट ना पाये
जंगल अब ना घट पायें |
मिलकर हम कसम ये खायें
आओ मिलकर पेड़ लगायें
पेड़ है देते प्राण वायु
जीवन इनसे हो दीर्घायु |
खुद समझे, दूसरों को बतायें
आओ मिलकर पेड़ लगायें |
हर एक का फर्ज है बनता
कम से कम एक पेड़ लगायें
पल पल बढ़ता प्रदूषण पर
आओ मिलकर पेड़ लगायें
हरा भरा ये देश बनायें |

समृद्धि कागे

कक्षा: दसवी 'अ'

कोरोना गीत

यार मित्र निकट नहीं आवे, कोरोना जब नाम सुनावे
इनके नाम की बाजे डंका इनको नहीं किसी काल की चिंता
मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारे बंद पड़े तेरे खौफ के मारे
जिस देश मे ये है जाते, वो देश खाली हो जाते
जहाँ भी जाते सब डर जाते सब के सब घर में छिप जाते
इनसे कापे सभी नर नारी हो ना जाये ये बीमारी
गलती से छिकी आ जाए पूरी एरिया खाली हो जाए
खाँसी , जुकाम इनके छोटे भ्राता लक्षण ऐसे ही दिखलाता
ठंढा मौषम इन्हे अति प्यारा, जिसमे फैले तेज बीमारी
इंशा से इंशा में जाता फिर ऐसे बढ़ते ही जाता
आओ इनको दूर भगाये भीड़ – भांड से सदा बचाए
जहा भी जाये मास्क लगाये हाथ धोये बिन कुछ ना खाए
आओ निभाए जिम्मेदारी इससे बचने की तैयारी

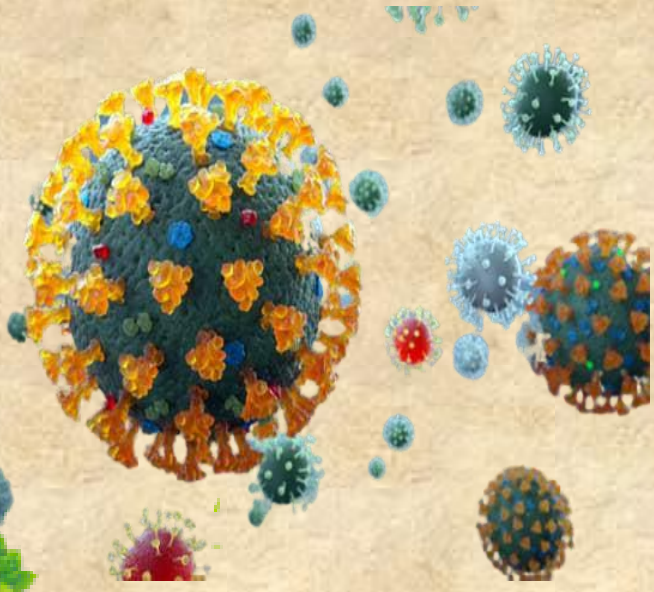

संस्कृति स. पीरप्पगोळ
कक्षा : सातवी ‘अ’

बचपन

कहां गई वो अमीरी
जब पानी में हमारे भी जहाज तैरते थे ,

कहां गई वो शौकत
जब हवा में हमारे भी विमान उड़ते थे ,

कहां गए वो उत्सव
जहां हम बिना बुलाए मेहमान बन जाते थे ,

कहां गए वो खेल
जहां से हम रोज चोट खाकर जाते थे ,

याद करके उन लम्हों को
एक मुस्कान आ जाते है ,

बचपन तुझे बोलने को
एक ज्वाला-सी उठ जाती है,

वो दौड़ने को तैयार है खाने से इंकार
झलकते बचपन की मीनार,

तुझे याद करके फिर बचपन
मैं बच्चा बन जाता हूं ,

आसमान में उड़ जाने की
लालसा पर मुस्काता हूं

तितली के साथ उड़ने को
फिर रह-रह जाता हूं ,

बचपन तुझे बुलाने को
फिर तड़प कर रह जाता हूं

गगन में तुझ संग उड़ जाने को
फिर बच्चा बन जाता हूं।

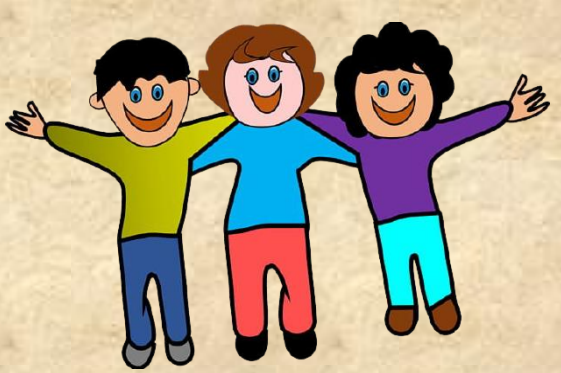

दीपांशु यादव
कक्षा-आठवीं 'अ'

कोरोना महामारी

वो दिन भी क्या दिन थे
जब हम बारिश में भीगा करते थे
मस्ती और मौज से धूम धाम मचाते थे
घूमने को बे झिझक जाते थे

पर आ गया अब कोरोन महामारी
पड़ गया संकट हम पे भारी
दूर हुए सब यार और यारी
कब तक रहेगा ये कष्ट जारी

कोरोना की वजह से ना जा सकते बाहर
सब काम हो रहे घर के अंदर
कब होगा बंद ये ऑनलाइन ऑनलाइन का खेल
दो साल से पड़े घर में लग रहा जेल

शिक्षा भी ऑनलाइन हो रहा है
खेल भी ऑनलाइन हो रहा है
बच्चों के हाथ में मोबाइल आ रहे हैं
छोटे सारे खेल कूद भूल रहे हैं

ये संकट कम हो जाए यही है दुआ
सपने आते विद्यालय शुरू हुआ
फिर से हुआ ऑफलाइन ऑफलाइन का खेल शुरू
फिर से देखे हम अपने यार और गुरु

अनुराग तंगडी
कक्षा-दसवीं 'अ'

ताजमहल

भारत में बहुत से विदेशी पर्यटक घूमने के लिए आते हैं, क्योंकि भारत में बहुत से घूमने के पर्यटक स्थल है। जैसे लाल किला, क़ुतुब मीनार, सूर्य मंदिर आदि। इसके अलावा यहां पर हर राज्य में बहुत ही ऐतिहासिक स्थल भी हैं, परंतु भारत की शान बढ़ाने में सबसे बड़ा योगदान ताजमहल का है।

ताजमहल भारत में आगरा शहर में यमुना नदी के किनारे पर बना हुआ एक सफेद संगमरमर का मकबरा है। यह मकबरा 1632 मे मुमताज की याद में मुगल बादशाह शाहजहां ने बनवाया था। यहां पर स्वयं शाहजहां का भी मकबरा बना हुआ है।

ताजमहल का निर्माण 1643 में हुआ था, लेकिन और भी कार्य होने के कारण यहां पर 10 साल तक काम लगा था। ताजमहल के निर्माण में 1653 में लगभग 32 मिलीयन रुपए लग चुके थे। आज उसकी कीमत 70 बिलियन रुपए तक है।

ताजमहल को 1983 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामांकित किया गया। यह एक मुगल वास्तुकला का शानदार उदाहरण है और आज यह इतिहास का प्रतीक माना जाता है। यह दुनिया भर के लोगों को अपनी और आकर्षित करता है, इसे 2000 में दुनिया के सात अजूबों में शामिल कर दिया गया था।

ताजमहल का निर्माण

ताजमहल को शाहजहां ने अपनी पत्नी मुमताज के याद में 1631 में बनवाया था। जिसकी उस वर्ष 17 जून को मृत्यु हो चुकी थी, जबकी उनकी 14 संताने थी। ताजमहल का निर्माण 1643 मे पूरा हुआ, परंतु 5 साल इसके आसपास की जगह को बनाने में लग गए। ताजमहल एक प्रेम कहानी का प्रतीक

प्रथमेश, पांचवी 'ब'

मेरी नानी

मेरी नानी बड़ी प्यारी,
अम्मी से ज्यादा प्यारी,
हर वक्त ख्याल रखते हमारा,
हर तरह से ध्यान रखते हमारा,
रूठे तो फौरन मनाए .
चोरी से पैसे दिए.
बोले अम्मी से छुपा कर वापस आजा कुछ चटपटा खा कर,
पढ़ाई में जब ध्यान ना लगे नानी बोले आ मैं सिखाऊं अच्छी अच्छी कहानी सुनाकर
अच्छे-अच्छे बातें बता कर पढ़ने में हमारी मदद है करते नानी हमारे बड़े प्यारे गुरु
अम्मी का हर फर्ज निभाते
इनका ज्ञान बड़ा निराला इनकी सोच बड़ी निराली कहते हमेशा करो भगवान.. को याद
इस कोरोना काल में बड़ी फिक्र करते
हमेशा वायरस को डांट डपट दे
नानी कहते चल आजा वायरस मासूम बच्चों सुधार जा
इन छुट्टी में हमें खूब खिलाएं हर चीज का मजा कराए
मुझे है अम्मी से बढ़कर प्यार क्योंकि नानी देती हमें अच्छे संस्कार
अल्लाह ऐसे नानी सबको दे उनकी उम्र बहुत बड़ा दे
हम रखेंगे हमेशा उनका ख्याल
हमेशा मनाएंगे उनके साथ धमाल
हम बच्चों की आप हैं ढाल वरना हो जाता हमारा बेहाल
अच्छी नानी प्यारी नानी जग में सबसे प्यारी नानी

मोहम्मद इहतेशाम
कक्षा- छठी 'अ'

विद्यार्थी जीवन में एकाग्रता का महत्त्व

जीवन में लक्ष्य तक पहुंचने तक अपने मन में भटकाव न आने देना ही एकाग्रता कहलाती हैं। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए Mind Concentration का बड़ा महत्व है। जीवन में किसी भी बड़े व्यक्ति के जीवन को उठाकर देखें तो उन्होंने जीवन में एकाग्रता को बनाए रखा है। जब हम खिलाड़ी सचिन तेंदुलकर, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, आईएएस टोपर नंदिता के आर और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को देखते हैं तो स्वयं को ऊर्जावान और आत्मविश्वास से भरा महसूस करते हैं न और मन करता है कि हम भी उनके जैसे कामयाब बन जाए कोई भी कार्य या लक्ष्य मुश्किल नहीं होता हैं।

हर कार्य चाहे कितना भी कठिन हो, उसे एकाग्रता से सरल बनाया जा सकता है। कोलंबस नई दुनिया की खोज इसलिए कर पाया क्योंकि उसने दो दशक से भी अधिक समय तक अपनी एकाग्रता को समुद्री अभियान पर केन्द्रित कर लिया था।

दिव्यांग होते हुए भी एवरेस्ट विजेता अरुणिमा सिन्हा, प्रशासनिक अधिकारी इरा सिंघल पूरी दुनिया को अपनी कामयाबी से इसलिए चकित कर पाए, क्योंकि उन्होंने एकाग्रता से अपने लक्ष्य को जीवन का उद्देश्य बना दिया विदयार्थी जीवन से ही एकाग्रता की आदत डाल लेनी चाहिए। एकाग्रता भी एक आदत है। यह एक ऐसी आदत है जो पूरी उम्र आदमी को सुख और कामयाबी देती हैं।

पौराणिक काल से ही एकाग्रता के महत्व पर बल दिया जाता रहा है। जब कौरव और पांडव गुरुकुल में पढ़ते थे तो उनके गुरु भी उन्हें एकाग्रता का पाठ पढ़ाते थे। आपको वह कहानी तो याद है न जब एक दिन गुरु द्रोण ने पेड़ पर लकड़ी की चिड़िया रखकर सभी शिष्यों

को उस पर निशाना साधने के लिए कहा था। निशाना लगाने से पहले उन्होंने सबसे पूछा था कि तुम्हे पेड़ पर क्या दिखाई देता है? अनेक शिष्यों ने उत्तर दिया कि उन्हें पेड़ पत्तियां, चिड़ियाँ आदि दिखाई देते हैं। अंत में उन्होंने अर्जुन से पूछा तुम्हें क्या दिखाई देता है, अर्जुन बोले- गुरुजी मुझे तो केवल चिड़ियों की आँख दिखाई देती हैं। आँख पर एकाग्रता केन्द्रित करने के कारण अर्जुन ने उस पर सही निशाना लगाया और यही कारण था कि वे महान धनुर्धर बन पाए। स्वामी विवेकानंद जी बेहद एकाय थे। उनकी एकाग्रता इतनी चमत्कारित होती कि वे एक बार में पूरी पुस्तक पढ़ लेते थे। उनसे पढ़ा गया किसी भी पस्तक से प्रश्न पुछने पर जवाब के साथ जवाब कौन सी पृष्ठ पर मिलेगा यह भी बताते थे। जब वे एकाग्रता की राह पर थे तो उन्होंने कहा था कि अगर मेरा दुबारा जन्म हो तो मैं केवल एकयता की शक्ति विकसित करुगा।

जब व्यक्ति कार्य के प्रति एकाय हो जाता है तो वह मनोयोग के साथ उसे करता है एकाग्रता के साथ काम करने से बहुत सारे लाभ होते हैं। यदि आप मान लगाकर पढ़ते हैं तो परीक्षा में अच्छे अंकों के साथ पास होते हैं। किसी भी काम को एकाग्रता के साथ किया जाए तो उसमें असाधारण सफलता मिलती है। एकाग्रता के साथ काम करने से तनाव और बिमारी भी दूर रहते हैं, क्योंकि एकाग्र व्यक्ति अपने कार्य को पूरा करने में तन मन से लगा रहता है। आप भी आज से ही एकाग्रता को अपनी आदत बना लीजिए और जीवन में सुंदर सुंदर रंग बिखेरिये।

एकाग्रता सफलता का जादू।

पारस १० वी 'ब

विद्यार्थी के पाँच गुण

काक चेष्टा, बको ध्यानं,

स्वान निद्रा तथैव च ।

अल्पहारी, गृहत्यागी,

विद्यार्थी पंच लक्षणं ।

एक विद्यार्थी मे यह पांच लक्षण होने चाहिए...

कौवे की तरह जानने की चेष्टा,

बगुले की तरह ध्यान,

कुत्ते की तरह सोना ,

अल्पाहारी, आवश्यकतानुसार खाने वाला

और गृह-त्यागी होना चाहिए ।

संस्कृति स. पीरप्पगोळ

कक्षा : सातवी 'अ'

चाँद की बात

मैं उस चाँद की बात नहीं करता

जो सूरज के छिपने के बाद नजर आता है।

मैं उस चाँद की भी बात नहीं करता

जो दो दिन में ही ढल जाता है।

मैं तो उस चाँद की बात करता हूँ

जो सदियों गुजरने के बाद भी नजर आता है।

संस्कार स. पीरप्पगोळ

कक्षा : ४ 'अ'

सुविचार

*शिक्षा का उद्देश्य है एक खाली दिमाग को खुले दिमाग में परिवर्तित करना|

*एक शिक्षक दरवाजा खोल सकता है, लेकिन उस दरवाजा के अन्दर प्रवेश आपको खुद ही करना है|

*शिखर तक पहुँचने के लिए ताकत चाहिए, चाहे वो माउंट एवेरेस्ट शिखर हो या कोई दूसरा लक्ष|

*कोई लक्ष न होने की दिक्कत यह है की आप अपनी जिंदगी के मैदान में इधर-उदर दौड़ते हुए बिता देंगे पर एक भी गोल नहीं कर पाएंगे|

*कल से सीखे, आज में जिए, कल के लिए उम्मीद रखे जरुरी यह है की प्रश्न करना मत छोड़िये|

*जीवन मिलना भाग्य की बात है, मृत्यु होना समय की बात है| परन्तु मृत्यु के बाद भी लोगो के दिल में बने रहना, ये जीते जी किये गए कर्मो की बात है|

*दूसरो की मदद के लिए किया गया त्याग व्यक्ति को निर्मल बनाता है| कर भला तो हो भला अंता भला तो सब भला|

*सुख शांति चाहते हो तो दूसरों की निंदा करने की आदत छोड़ कर दूसरों को सुख शांति देने की आदत आपना लो|

अद्विका गुरव

कक्षा: दसवी 'ब'

बाढ एक प्राकृतिक आपत्ति

'बाढ़' इस शब्द से अब इतनी नफरत होने लगी है, कि लगता है इस शब्द को दोबारा न सुनू . बाढ को मैंने अपने सामने से देखा है और इस का अनुभव भी मुझे है. अनेक वर्षों से हमारे क्षेत्र में बाढ की परिस्थिति निर्मित हो रही है. इस कारण लोगों को अनेक प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है. कई लोगों की जानें जाती हैं, कई लोग बेघर हो जाते हैं. हमारे यहाँ ज्यादातर खेत नदी के किनारे पर होते हैं, इस कारण बाढ आने पर खेतों में जो फसल होती है वो पानी में डूबकर पूरी तरह से नष्ट हो जाती है. लोग कहते हैं बारह महीनों का कष्ट ,दस - बारह दिनों में खत्म हो जाता है. इसलिए जो लोग सिर्फ खेती पर निर्भर रहते हैं, उनका बहुत सारा नुकसान होता है. हमारे आस पास के गाँव पूरी तरह से पानी मे होते हैं. बाढ आने पर लोग अपने घर का सारा सामान उठाकर अपने रिश्तेदारों के यहाँ चल पडते है. पशुओं की तो इंसानों से भी ज्यादा बूरी हालत है. कई लोग अपने साथ अपने पशूओं को भी ले जाते हैं तो कई लोग उन्हें छोड़ जाते हैं और इस कारण जानवर पानी मे डूबकर मर जाते हैं. अंत मै ये ही कहना चाहूंगा कि बाढ की परिस्थिति बहुत भयंकर होती है. और बाढ क्या है ये तब तक समझ में नहीं आता जब तक पानी अपने दरवाजे पर नहीं आये.

आशीष कागवाड़े

कक्षा- दसवीं 'अ'

मेरा भारत

भारत मेरा प्यारा देश,
सब देशों से न्यारा देश ।
हिंदू-मुस्लिम भाई-भाई,
मिलकर रहते सिख-ईसाई।
भारत प्यारा देश हमारा।।

सारे जग से शान निराली,
कण-कण में छाई हरियाली।
गंगा -यमुना इसकी शान,
जग में इसकी संस्कृति महान।
भारत प्यारा देश हमारा।।

आदर्श संजय मड्डे
छठी 'अ'

तितली रानी

तितली रानी तितली रानी।
कितनी प्यारी कितनी सयानी।
रंग बिरंगे पंख सजीले।
लाल गुलाबी नीले पीले।
फूल फूल पर जाती हो।
गुनगुन गुनगुन गाती हो।
कली कली पर मंडराती हो।
मीठा मीठा रस पीकर उठ जाती हो।
अपने कोमल पंख दिखाती।
सबको उनसे है सहलाती।
तितली रानी तितली रानी।
कितनी सुन्दर तितली रानी,
इस बगिया में आना रानी।
तितली रानी तितली रानी।

श्रावन्या
दूसरी 'अ'

पापा कहते थे कि

बचपन की याद से

लेकर जवानी के ख़्वाब को

सिमेंट लगी उस फाउंडेशन

वाली दीवार पर उतार देते हैं

पापा कहते थे कि कुछ लोग एक ही

घर में ज़िन्दगी गुज़ार लेते हैं

शिव कुमार

दसवीं 'अ'

जिंदगी...

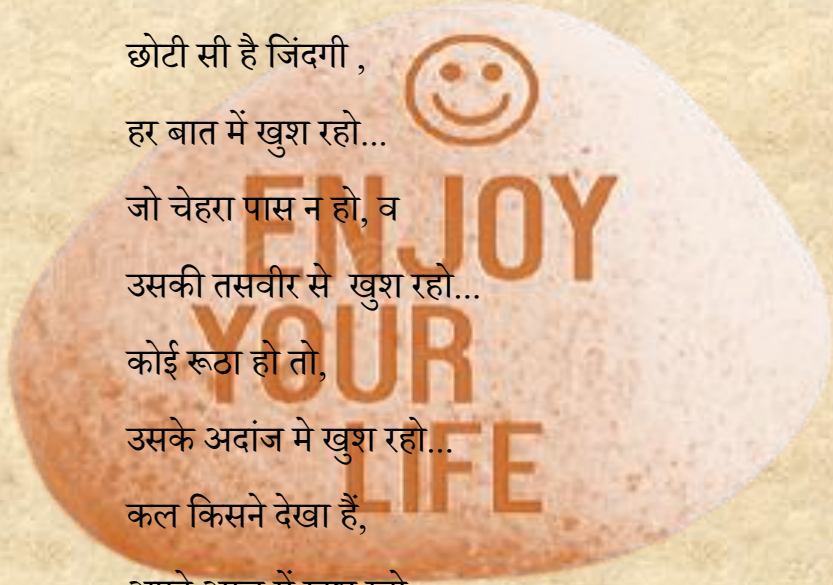

छोटी सी है जिंदगी ,

हर बात में खुश रहो...

जो चेहरा पास न हो, व

उसकी तसवीर से खुश रहो...

कोई रूठा हो तो,

उसके अदांज मे खुश रहो...

कल किसने देखा हैं,

अपने आज में खुश रहो...

प्रिया दिवटे

कक्षा - दसवीं 'ब'

हिम्मत रख

कुछ करना है, तो डटकर चल।
थोडा दुनिया से हटकर चल।
लीक पर तो सभी चल लेते हैं।
कभी इतिहास को पलटकर चल।
बिना काम के मुकाम कैसा?
बिना मेहनत के , दाम कैसा?
जब तक ना हासिल हो मंजिल,
तो राह में आराम कैसा?
अर्जुन सा निशाना रख।
मन में ना कोई बहाना रख।
लक्ष्य सामने है, बस उसी पे अपना ठिकाना रख।
सोच मत, साकार कर।
अपने कर्मों से प्यार कर।
मिलेगा तेरी मेहनत का फल।
किसी और का ना इंतजार कर।
जो चले थे अकेले उनके पीछे आज मेले हैं,
जो करते रहे इंतजार उनकी,
जिंदगी में आज भी झमेले हैं।

मान्यता मुदिगौडा
कक्षा- दशमी ब

हम और कोरोना

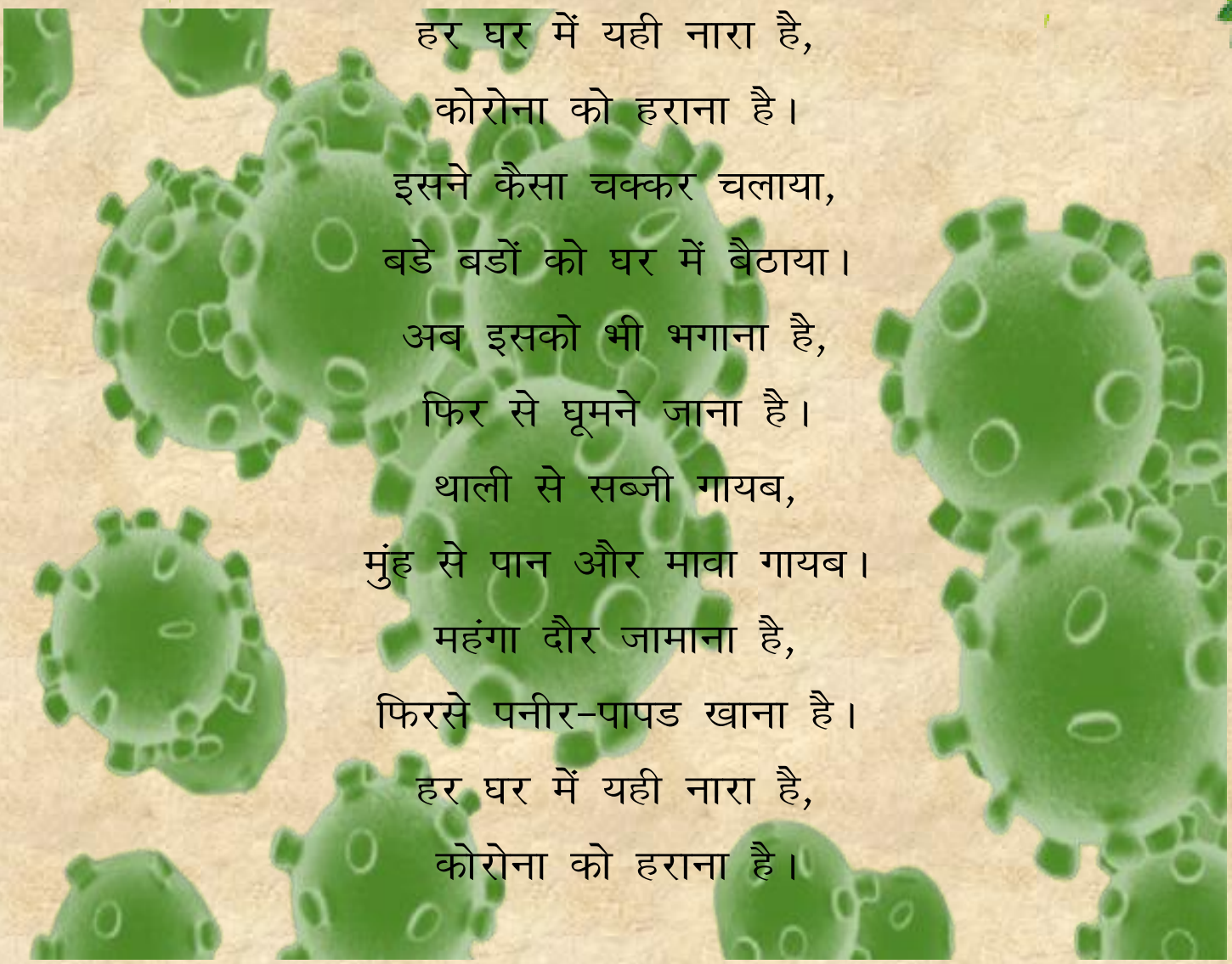

हर घर में यही नारा है,
कोरोना को हराना है।
इसने कैसा चक्कर चलाया,
बडे बडों को घर में बैठाया।
अब इसको भी भगाना है,
फिर से घूमने जाना है।
थाली से सब्जी गायब,
मुंह से पान और मावा गायब।
महंगा दौर जामाना है,
फिरसे पनीर-पापड खाना है।
हर घर में यही नारा है,
कोरोना को हराना है।

नेत्रा नितीन कुदले
कक्षा- तीसरी ब

गोकाक

जो घटप्रभा नदी पर स्थित है

नाम उसका गोकाक जल प्रपात है।

मेरी सबसे मन मोह लेने वाला झरना।

हमेशा बारिश के मौसम में पानी से भरना।

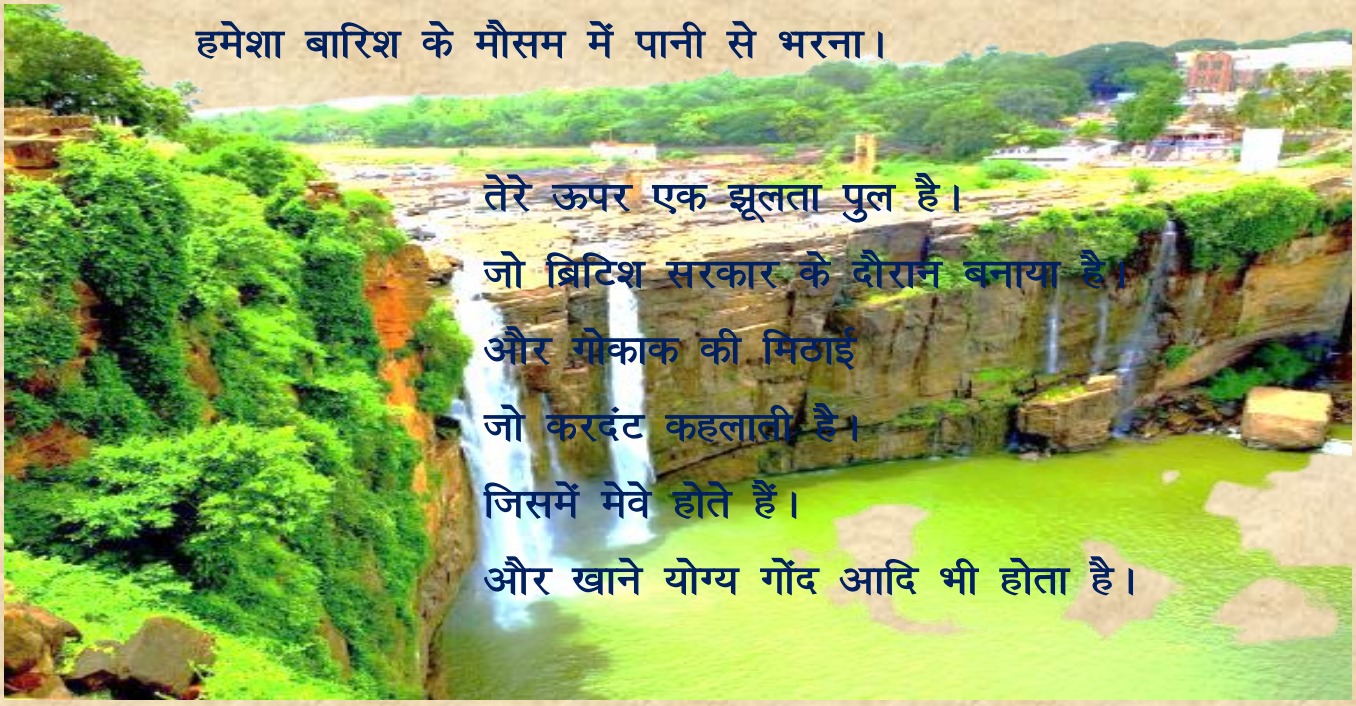

तेरे ऊपर एक झूलता पुल है।

जो ब्रिटिश सरकार के दौरान बनाया है।

और गोकाक की मिठाई

जो करदंट कहलाती है।

जिसमें मेवे होते हैं।

और खाने योग्य गोंद आदि भी होता है।

अनुष्का कल्याणशेट्टी

कक्षा- अष्टमी अ

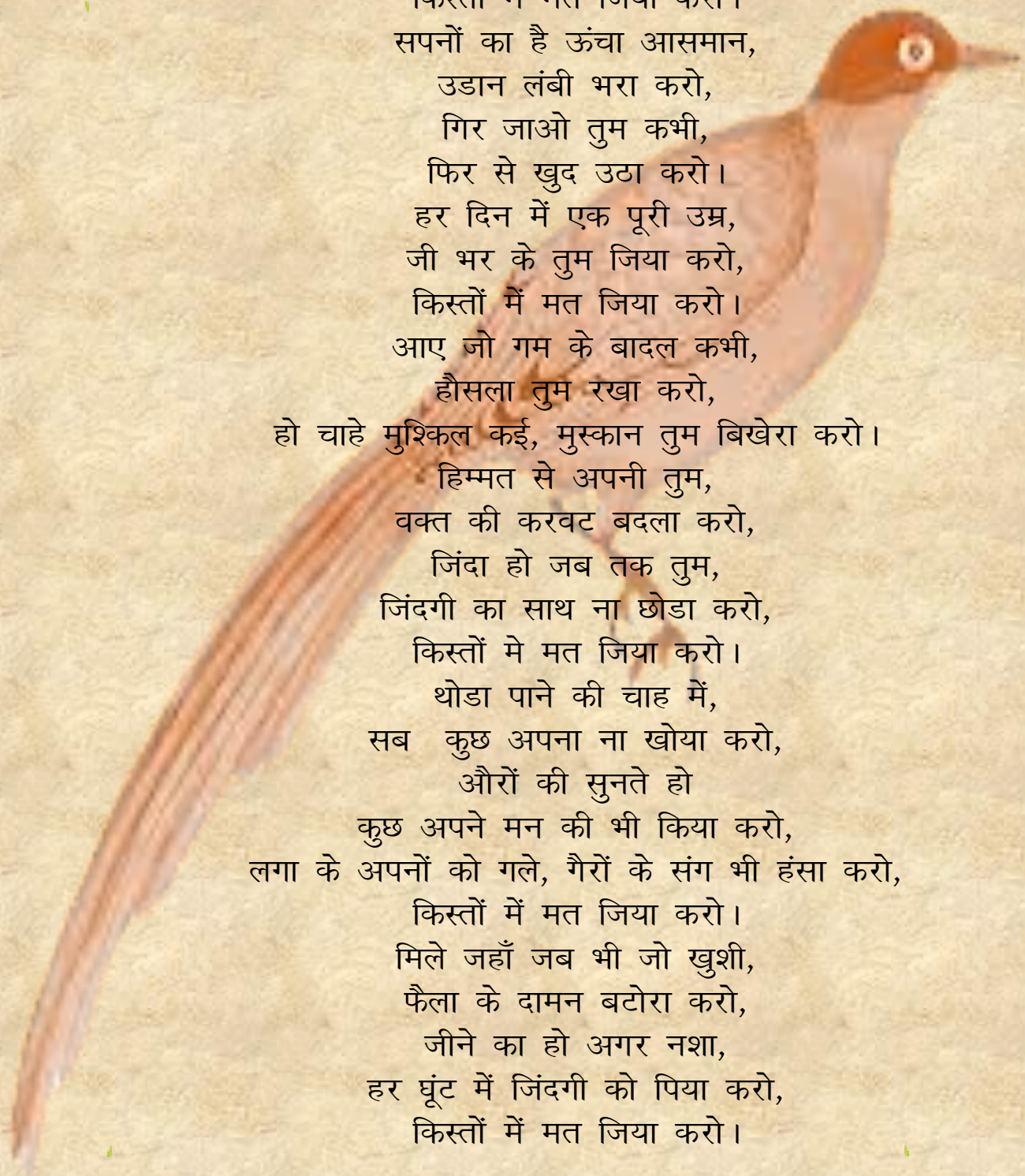

हर पल है जिंदगी का उम्मीदों से भरा

हर पल है जिंदगी का उम्मीदों से भरा,
हर पल को बाहों में अपनी भरा करो,
किस्तों में मत जिया करो।
सपनों का है ऊंचा आसमान,
उडान लंबी भरा करो,
गिर जाओ तुम कभी,
फिर से खुद उठा करो।
हर दिन में एक पूरी उम्र,
जी भर के तुम जिया करो,
किस्तों में मत जिया करो।
आए जो गम के बादल कभी,
हौसला तुम रखा करो,
हो चाहे मुश्किल कई, मुस्कान तुम बिखेरा करो।
हिम्मत से अपनी तुम,
वक्त की करवट बदला करो,
जिंदा हो जब तक तुम,
जिंदगी का साथ ना छोडा करो,
किस्तों मे मत जिया करो।
थोडा पाने की चाह में,
सब कुछ अपना ना खोया करो,
औरों की सुनते हो
कुछ अपने मन की भी किया करो,
लगा के अपनों को गले, गैरों के संग भी हंसा करो,
किस्तों में मत जिया करो।
मिले जहाँ जब भी जो खुशी,
फैला के दामन बटोरा करो,
जीने का हो अगर नशा,
हर घूंट में जिंदगी को पिया करो,
किस्तों में मत जिया करो।

शिफा नदाफ
कक्षा- दशमी ब

पिता दिवस

जीवन में जरूरी है नदी की मिठास
जितनी जरूरी है जीवन में हमारे
नदी की मिठास उतना ही जरूरी है
समुद्र- सा खारापान भी।

आसान नहीं है बनना सागर
सागर बनने के लिए चाहिए
विशालता, गहराई और
सबको आत्मसात करने का गुण।

माना कि मौन रहकर सागर
समाहित कर लेता है स्वयं में
उसकी ओर आने वाली हर नदी को
पर नदियों ने समझा
दर्द सागर का।

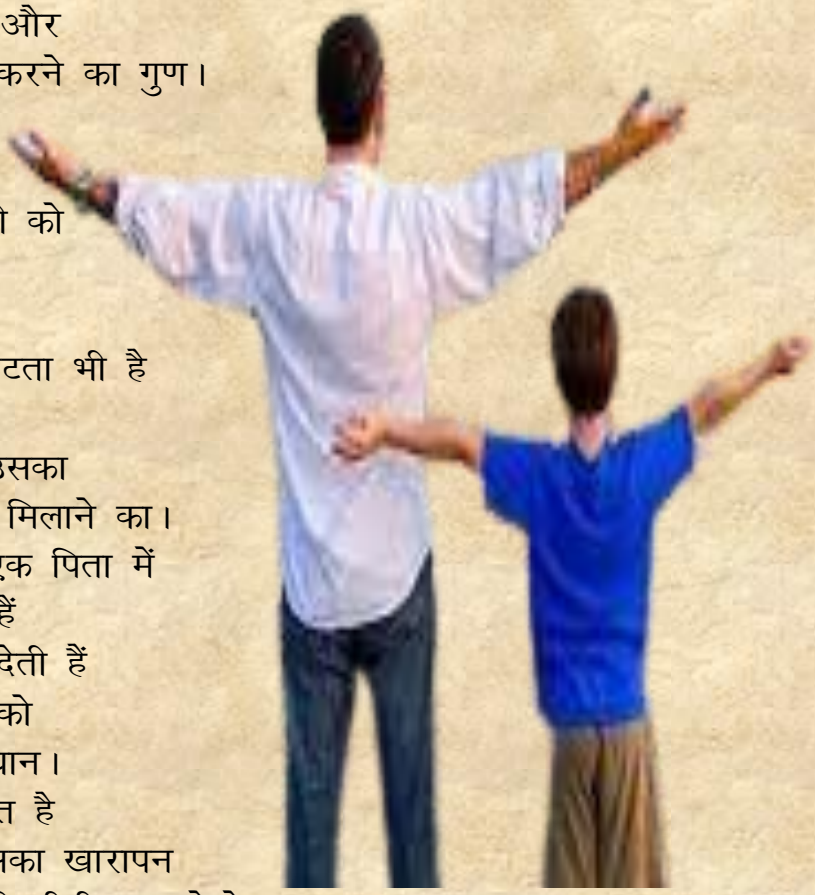

उफनता और सिमटता भी है
यदि वह तो केवल
प्रयोजन होता है उसका
स्वयं में औरों को मिलाने का।

सागर के ये सारे गुण होते है एक पिता में
और मिलने वाली नदियाँ होती हैं
उसकी वे विभिन्न भावनाएं जो देती हैं
मिलकर विस्तार अपने परिवार को
जहाँ से चलता है सृष्टि का विधान।

हाँ, यह अलग बात है
नहीं सुहाता है उसका खारापन
लगती हैं नदियाँ ही मीठी पर सोचो जरा
सागर भी जाए यदि मीठा
तो क्या सुरक्षित उसका परिवार
रह पायेगा सकुशल?

इसलिए कहती हूँ जितनी जरूरी है
जीवन में हमारे नदी का मिठास
उतना ही जरूरी है समुद्र-सा खारापन।

समृद्धि कागे
कक्षा- दशमी अ

आंबोली घाट

आंबोली घाट ये पञ्चिम घाट है | आंबोली घाट ये एक विश्व विविधता का प्रसिद्ध स्थल का छोटासा हिस्सा है| वर्षा ऋतु के दोरान यहा का झरना बहुत खूब सुरत लगता है | हम वंहा जा कर सभी जगह का आनंद ले लिये हैं | वह का माहोल इतना अच्छा ओर थंड था की वहासे वापिस ना आने का मन था | वह घनघोर झाडिया है | ओर छोटे ,बडे झरने भी है | वो निसर्ग आपनेपन का एहेसास दिलाता है | मुझे बहुत अच्छा लगा ,बहुत मजा आ गया. | ओ सफर ओर ओ दिन में कभी नहीं भुल सकती |

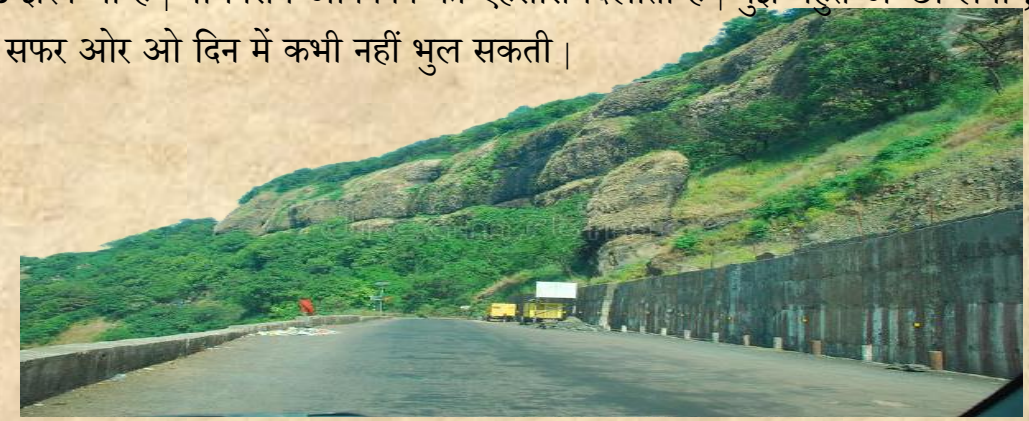

भुवन
दूसरी 'अ'

मेरे प्यारे प्यारे पापा,
मेरे दिल में रहते पापा,
मेरी छोटी सी ख़ुशी के लिए,
सब कुछ सेह जाते हैं पापा,
पूरी करते हर मेरी इच्छा,
उनके जैसा नहीं कोई अच्छा,
मम्मी मेरी जब भी डांटे,
मुझे दुलारते मेरे पापा,
मेरे प्यारे प्यारे पापा।,

कृति
दूसरी 'ब'

एक मछुआरे की कहानी

एक समुद्र के किनारे एक मछुआरा रहता था | वह हर रोज़ मछली पकड़ता था | वो बहुत परेशान रहता था क्यूंकि वहां बहुत सारे मछुआरे थे उसकी वजह से इसके द्वारा पकड़ी हुई मछलियों को सही दाम नहीं मिलता था | ये बाकी मछुआरों से काफी अलग था ‘ बाकी सब सुबह मछली पकड़ते थे और ये रात में| ये हर रोज़ रात को मछली पकड़ता था “ और ऐसे ही एक दिन ये रात को मछली पकड़ने लग गया, वो घंटो बैठा रहा लेकिन एक भी मछली उसके जाल मे नहीं फंसी बस छोटे छोटे पत्थर फंस रहे थे | वह आखरी बार कोशिश करने वाला था और उसने झाल पैखी और कीचा और इस बार भी पत्तर निकले तो वो सोच मे पढ़ गया और समुद्र के किनारे बैठ के झाल मे पसे पत्तरों को समुद्र मे फकने लगा और वही पर सो गया, सुबह उठ कर देखा और वो चौक गया क्यूंकि जो उसके मछली के झाल मे छोटे – छोटे पत्तर पसे थे वो पत्तर नहीं बल्कि बेश किंती मोती थे |

यह कहानी से ये सीख मिलती है की --- हम कॉपी भार ज़िन्दगी मे आने वाले मुश्किलों को देख कर ज़िन्दगी मे कामियाब होने वाले रास्तो को अनदेखा कर देते है और अपने हाथ से मौका गवा देते है, हमें कुछ भी करने से पहले 100 बार सोचा होगा तभी हम अपने ज़िन्दगी मे सही फैसला ले सकें।

सुमित रेंटे

कक्षा- दसवीं ‘ब’

कृष्णा नदी

नदी दक्षिण भारत की एक महत्त्वपूर्ण नदी है, इसका उद्गम महाराष्ट्र राज्य में महाबलेश्वर के समीप पश्चिमी घाट श्रृंखला से होता है, जो भारत के पश्चिमी समुद्र तट से अधिक दूर नहीं है। यह पूर्व से पश्चिम की ओर बहती है और फिर सामान्यत: दक्षिण-पूर्वी दिशा में सांगली से होते हुए कर्नाटकराज्य सीमा की ओर बहती है। यहाँ पहुँचकर यह नदी पूर्व की ओर मुड़ जाती है और अनियमित गति से कर्नाटक और आंध्र प्रदेश राज्य से होकर बहती है। अब यह दक्षिण-पूर्व व फिर पूर्वोत्तर दिशा में घूम जाती है और इसके बाद पूर्व में विजयवाड़ा में अपने डेल्टा शीर्ष की ओर बहती है। यहाँ से लगभग 1,290 किमी की दूरी तय करके यह बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। कृष्णा के पास बड़ा और बहुत उपजाऊ डेल्टा है, जो पूर्वोत्तर में गोदावरी नदी क्षेत्र की ओर आगे बढ़ता जाता है।

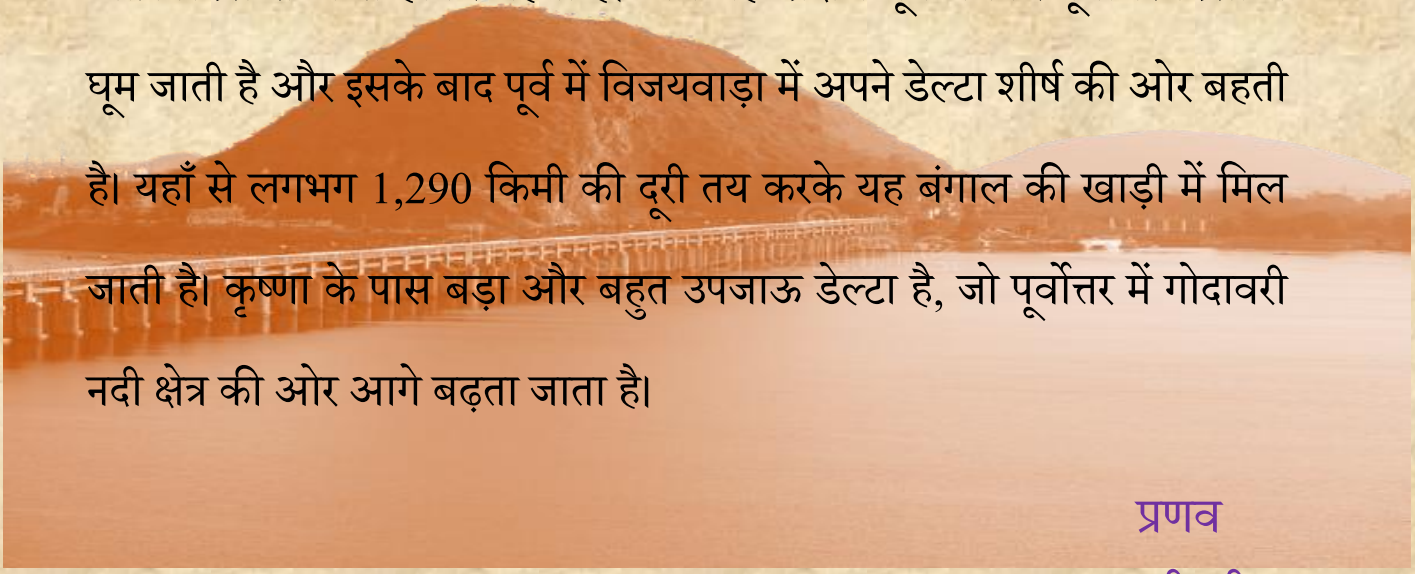

प्रणव

कक्षा - तीसरी 'अ'

संस्कृत विभाग

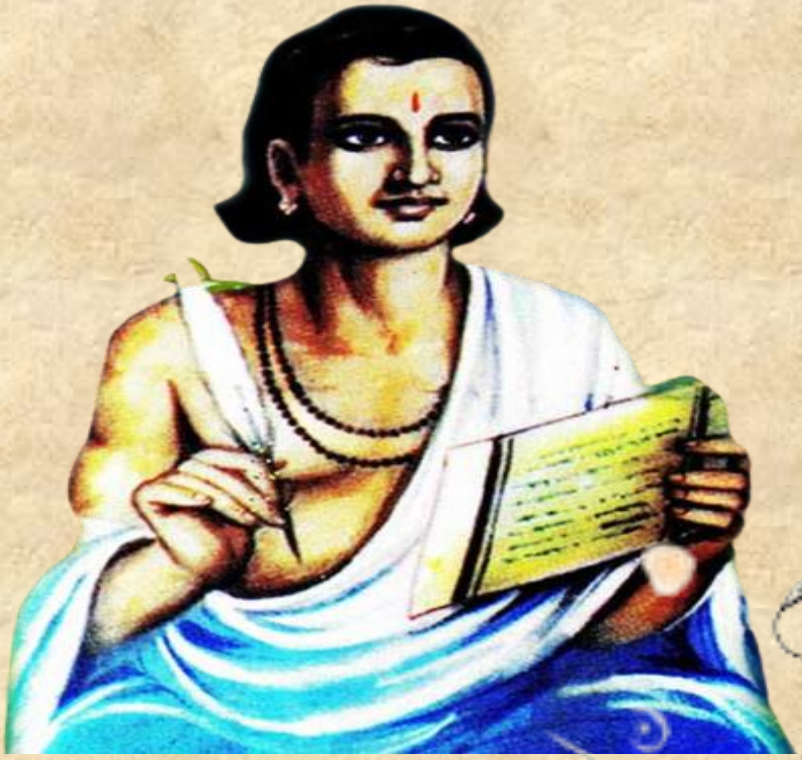

विना वेदं विना गीतं, विनां रामायणीं कथां।

विना संस्कृतभाषां च भारतं भारतं नहि।।

भारतीयसंस्कृतेः मुख्याधारः संस्कृतमेव अस्ति। संस्कृत विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा, समस्त भारतीय भाषाणां जननी अपि संस्कतमेव अस्ति। अद्य सम्पूर्णविश्वे संस्कृतस्य महत्त्वम् चर्चा श्रूयते। संस्कृतमेव संपूर्णविश्वे अतीव वैज्ञानिका भाषा अस्ति। वैश्रानिकाः कथयन्ति यत् संस्कृतभाषा एव संगणकस्य कृते सर्वोत्तमा भाषा। अस्मिन् भाषायाम् संगणकस्य कूटविधि (कोडिंग) सर्वश्रेष्ठं भविष्यति।

'ई-विद्यालय पत्रिका २०२१-२२' इति केन्द्रीय विद्यालय चिकोडी क्षेत्रस्य अस्यो संचिकायां संस्कृतभाषायाः विविधवर्णाः प्रस्तूयन्ते। विद्यालयस्य संस्कृतछात्राणां एषः यत्किंचित् प्रयासः। कोरोना महारोगप्रसारणकाले छात्राः संचिकायाः कृते प्रयासं कृतवन्तः अतः तेषां कृते धन्यवादर्याः। यद्यपि नास्ति एताः रचनाः मूलतः बालकानां तथापि तेषां संस्कृतानुरागः अस्माभिः अभिनन्दनीयः। पाठकाः अस्माकं भारतवर्षस्य गौरवभूतायाः संस्कृतभाषायाः रचनाः पठित्वा आनन्दिता भविष्यन्ति इति मन्ये।

धन्यवादः।

पुष्पेन्द्र बेनीवाल

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)

माँ ...

माँ, माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार,

न त्वया सदृश्य कस्याः स्नेहम्,

करुणा-ममतायाः त्वम् मूर्ति,

न कोअपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति।

तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति,

'माँ'शब्दस्य महिमा अपारः,

न माँ सदृश्य कस्याः प्यारः,

माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहारः।

संस्कृति स. पीरप्पगोळ

कक्षा : सप्तमी 'अ'

सूर्यः उदयं गच्छति।

सूर्यः उदयं गच्छति
चन्द्रः अस्तं गच्छति।
परितो भवति प्रकाशः
तमसो भवति विनाशः।।
मन्दं चलति समीरः
मधुपो भवति अधीरः।
कलिका-वृन्दं विकसति
लतिका-वृन्दं विलसति।।
निद्रा तन्द्रा भग्ना
जनता कर्मणि लग्ना।
सकले नव उल्लासः
वदने वदने हासः।।
पथि-पथि जन संचारः
नूपुर-रव- झंकारः।
विटपे खग-कुल रावः
चलितु चलिता गावः।।
हस्ते हस्ते पत्रं
वदने वदने चायम्।
खेलति बालक-वृंदं
गीतं गायं गायम्।।

स्नेहा अमरनाथ धूमाल
कक्षा- दशमी 'अ'

अम्बा

अम्बा सततं लालयति।
अम्बा सततं पालयति।
अम्बा सततं वेदयति।
अम्बा सततं तोषयति।
अम्बा नित्यं स्नापयति।
अम्बा नित्यं भाजयति।
अम्बा गीतं श्रावयति।
अम्बा मामकसर्वस्वम्।

भूमिका एस. भोसले
कक्षा- सप्तमी 'अ'

भारतं भारतीयं नमामो वयम्।

सागरं सागरीयं नमामो वयम्,
काननं काननीयं नमामो वयम्।।
पावनं पावनीयं नमानो वयम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्।
पर्वते सागरे वा समे भूतले,
प्रस्तरे वा गते पावनं संगमे।
भव्यभूते कृतं संस्मरामो वयम्
भारतं भारतीयं नमामो वयम्।।
वीरतां यत्र जन्माश्रिता संगता,
सूस्कृतिर्मानवीया कृता वा गता।
दैवसम्मानितं पावनं संपदम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्।।
कोकिला-काकली माधवाणाधवी,
पुष्पसम्मानिता यौवनावल्लरी।
षट्पदानामिह मादकं गुंजनं,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्।।
पूर्णिमा चन्द्रिका चित्तसम्बोधिका,
भावसंवर्धिका चास्ति रागात्मिका।
चंचलाचुबितं पावनं प्रांगमयम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्।।

शुभम अमरनाथ धूमाल
कक्षा- अष्टमी 'ब'

संस्कृतम्

संस्कृतम् सरलमस्ति।
सुलभापि अस्ति, मधुरमपि अस्ति।
तत् संस्कृतभाषातः संस्काराः अपि आगच्छन्ति।
विना संस्कृते संस्कारेन च जीवनम् अपूर्णम्।
तदर्थम् संस्कृतम् पठितव्यम्, वक्तत्यं, लिखितव्यम्।
इति अहं चिन्तनम् करोमि।
प्राचीन विद्या आदर्शविद्या,
संस्कृते एव अस्ति।

स्पूर्ति कुंबार
कक्षा– दशमी 'अ'

प्रकृतिः

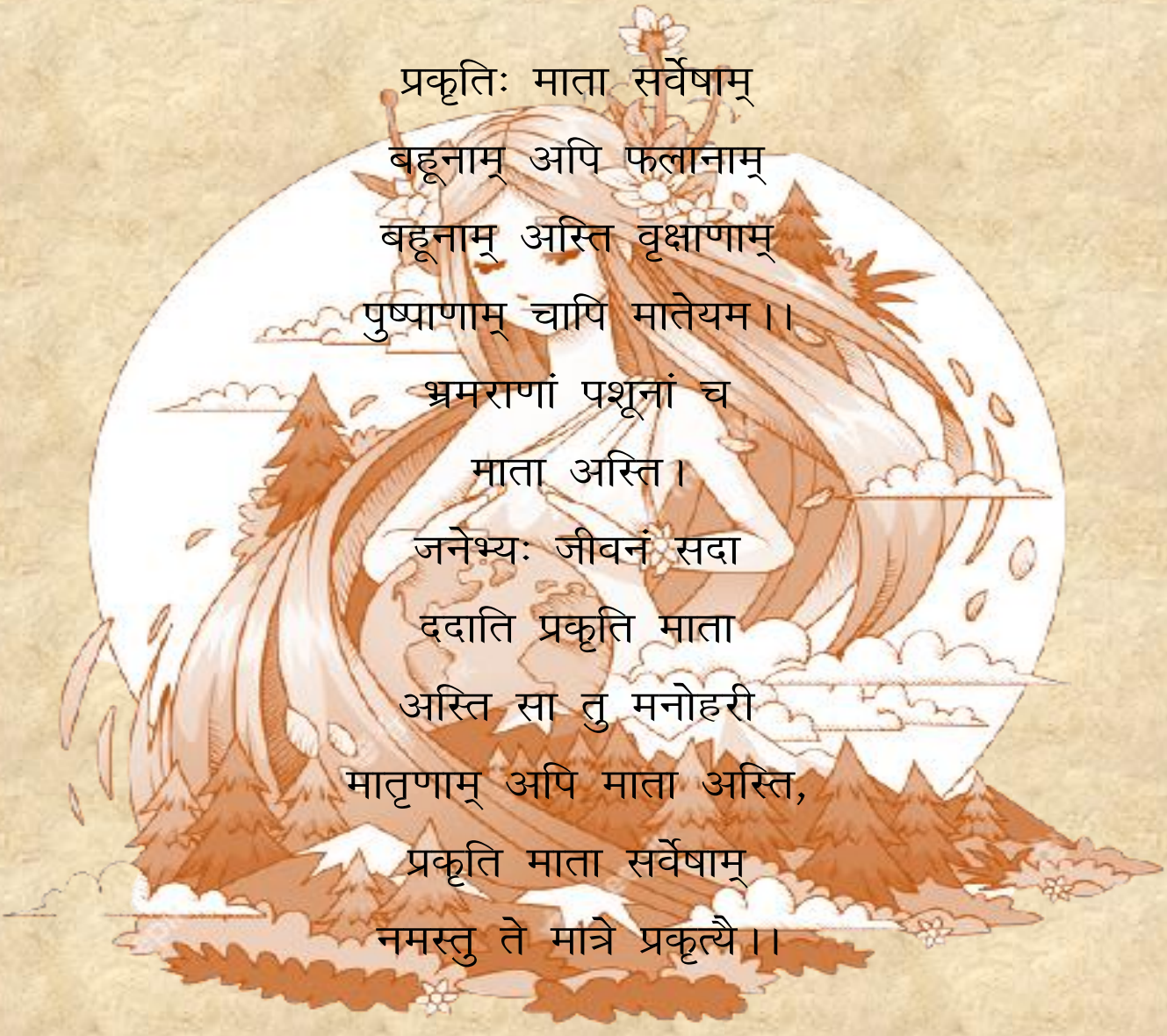

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्
बहूनाम् अपि फलानाम्
बहूनाम् अस्ति वृक्षाणाम्
पुष्पाणाम् चापि मातेयम।।
भ्रमराणां पशूनां च
माता अस्ति।
जनेभ्यः जीवनं सदा
ददाति प्रकृति माता
अस्ति सा तु मनोहरी
मातृणाम् अपि माता अस्ति,
प्रकृति माता सर्वेषाम्
नमस्तु ते मात्रे प्रकृत्यै।।

सन्मति पुजेरी
कक्षा- सप्तमी 'अ'

प्रहेलिकाः

वृक्षाग्रवासी न च पक्षिराजः, तृणं च शय्या न च राजयोगी।
सुवर्णकायो न च हेमधातुः, पुंसश्च नाम्ना न च राजपुत्रः।।

उत्तर- आम्रः

कृष्णमुखी न मार्जारी, द्विजिह्वा न च सर्पिणी।
पंचभर्ता न पांचाली, यो जानाति स पण्डितः।।

उत्तर- कलम

अस्ति कुक्षी शिरो नास्ति बाहुरस्ती निरंगुली
अहतो नरः भक्शीचा यो जानाति स पण्डितः।

उत्तर- युतकम् (कमीज)

न तस्यादिः न तस्यान्तः, मध्येयः तस्य तिष्ठति।
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति यदिजानासि तद्वद।।

उत्तर- नयन

तरुण्यालिंगितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रितः।
गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः।।

उत्तर- जलकुम्भः

श्रद्धा गोरे
कक्षा- दशमी अ

संस्कृत सूक्तयः

१. जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी।

अर्थात्

भूमि से श्रेष्ठ माता है, स्वर्ग से ऊंचे पिता हैं, माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है।

२. हस्तस्पर्शो हि मातृणामजलस्य जलांजलिः।

अर्थात्

माँ के हाथ का स्पर्श उस मुट्ठी भर पानी के समान होता है जो उसके अभाव में होता है।

३. अपूर्वः कोऽपि कोशोड्यं विद्यते तव भारति।

व्ययतो वृद्धि मायाति क्षयमायाति संचयात्।।

अर्थात्

हे सरस्वती! तेरा खजाना सचमुच अद्भुत है जो खर्च करने से बढता है और जमा करने से कम होता है।

४. अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

अर्थात्

उस महान गुरू को अभिवादन, जिससे उस अवस्था का साक्षात्कार करना संभव किया जो पूरे ब्रह्माण्ड में व्याप्त है, सभी जीवित और मृत में।

प्रज्ज्वल एम. पाटिल
कक्षा– दशमी 'ब'

आदिकविः महर्षिः वाल्मिकिः

सर्वस्मिन् विश्वे विख्यातस्य महाकाव्य रामायणस्य रचनाकारः महर्षिः वाल्मिकिः संस्कृतस्य आदिकविः मन्यते। एकदा सः ऋषिः शिष्यैः सह तमसानद्याः तीरे भ्रमति स्म। सहसा क्रौंच मिथुनयोः एक व्याघेन वध्यमानम् अवलोक्य, करुणार्द्र सः व्याधम् अवदत् ।

"मा निषाद् प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौञ्चमिथुनदिकमवधीः काममोहितम्

एतत् श्रुत्वा व्याधोऽपि पश्चात्तांपदग्धः अभवत्। एतत् कथ्यते यत् तदैव स्वयं ब्रह्मा भूमौ आगच्छत्, मुनिं च रामकथां रचयितुम् अप्रेरयत्। एवं रामायण नाम महाकाव्यस्य निर्माणं जाता।

रामायणस्य रचनाकालः ख्रिष्टाब्द पूर्व पञ्चम-शतकमस्ति। अस्य काव्यस्य छन्दः 'अनुष्टुपः' अस्ति। अस्मिन् काव्ये महाकाव्यस्य सर्वाणि लक्षणानि सन्ति। काव्ये कृतं प्रकृतिवर्णनम् अतीव मनोरमम् दृश्य अस्ति। षड्ऋतूनां, नदीनां, पर्वतानां वर्णनमपि सुन्दरम्। उपमा, अनुप्रासादि अलंकाराणाम् उपयोगः सुन्दराणि रूपाणि च दृश्यन्ते अस्मिन् काव्ये।

कवेः शैली अतिगम्भीरा, लालित्यपूर्णा च अस्ति। भारतीयाः अनेके कवयः वाल्मीकेः काव्यशैल्या प्रभाविताः सन्ति। रामायण महाकाव्यं तु तेषां स्फूर्तिस्थानं खलु। नूनम् अयम् आदिकविः सर्वेषां कवीनाम् आदर्शः एव।

रामायणस्य प्रमुख रसः करुणः। कविना सूचितः शोकः काव्यरूपेण श्लोकत्वम् आगतः इति कथ्यते।

हिन्दूसमाजे रामायणस्य महत्त्वम् अधिकम् अस्ति। अद्यपि प्रतिगृहे एतत्काव्यं पूज्यते। आदिकविना दत्तः अयम् अमूल्यः निधिः सर्वेः पूजनीयः। 'रामरक्षास्तोत्रे उचितमुक्तम्-

'कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्

आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्।'

भक्ति हंजि

दसवीं 'अ'

गुरुपादुकास्तोत्रम्

अनंतसंसार समुद्रतार नौकायिताभ्यां गुरुभक्तिदाभ्याम् ।

वैराग्यसाम्राज्यदपूजनाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 1 ॥

कवित्ववाराशिनिशाकराभ्यां दौर्भाग्यदावां बुदमालिकाभ्याम् ।

दूरिकृतानम्र विपत्ततिभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 2 ॥

नता ययोः श्रीपतितां समीयुः कदाचिदप्याशु दरिद्रवर्याः ।

मूकाश्च वाचस्पतितां हि ताभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 3 ॥

नालीकनीकाश पदाहृताभ्यां नानाविमोहादि निवारिकाभ्यां ।

नमज्जनाभीष्टततिप्रदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 4 ॥

नृपालि मौलिव्रजरत्नकांति सरिद्विराजत् झषकन्यकाभ्यां ।

नृपत्वदाभ्यां नतलोकपंकतेः नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 5 ॥

पापांधकारार्क परंपराभ्यां तापत्रयाहींद्र खगेश्वराभ्यां ।

जाड्याब्धि संशोषण वाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 6 ॥

शमादिषट्क प्रदवैभवाभ्यां समाधिदान व्रतदीक्षिताभ्यां ।

रमाधवांघ्रिस्थिरभक्तिदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥ 7 ॥

नाम- अनघा पवार
कक्षा- दशमी 'अ'

संस्कृत सुभाषितानि

ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।

भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्।।

अर्थात्: देना, लेना, एक-दूसरे के रहस्य बताना, रहस्य के बारे में कुछ भी पूछना, खाना और खिलाना - ये छह प्रेम के संकेत हैं।

अनादरो विलम्बश्च वै मुख्यम निष्ठुर वचनम्

पश्चतपश्च पञ्चापि दानस्य दूषणानि ।।

अर्थात् :- अपमान करके दान देना, विलंब (देर) से देना, मुख फेर के देना, कठोर वचन बोलना और देने के बाद पश्चाताप करना| ये पांच क्रियाएं दान को दूषित कर देती हैं।

वाणी रसवती यस्य,यस्य श्रमवती क्रिया ।

लक्ष्मी दानवती यस्य,सफलं तस्य जीवितं ।।

अर्थात् :- जिस मनुष्य की वाणी मीठी है, जिसका कार्य परिश्रम से युक्त है, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त होता है, उसका जीवन सफल है।

नाम- वीर र. जाधव

कक्षा- दशमी 'अ'

ENGLISH DEPARTMENT

Rasipuram Krishnaswami Iyer Narayanaswami

PATRIOTISM

Patriotism is an asset everyone must own it. A country is incomplete without this feeling. The feeling of patriotism must be taught to every child. The young generations are the future of the nation, they should aware of our history and the sacrifices made by our great patriots. Hosting Republic Day events, Independence Day events are not true patriotism but patriotism is a virtue that should be instilled in all.

The social and economic prosperity is connected with the youth generation. This responsibility can only be shared by the understanding of the nation's love and its importance. Being progressive is good but losing our culture in the rush of the fast-growing world should not be encouraged.

Keeping our area and city clean, following all the traffic norms, and not participating in any corruption reflect a person's devotion to his/her nation. A true patriot is laborious and works hard for the growth of his/her country. A person who is ready to bear all the sacrifices for the betterment of his/her country is saluted.

Great Indian spiritual leader Swami Vivekananda has always talked about patriotism and its importance for the nation. He said "Do you love your country? Then come, let us struggle for higher and better things, look not back, no, not even if you see the dearest and nearest cry, look not back, but forward". He also said that "Practical patriotism means not a mere sentiment or even emotion of love of the motherland but a passion to serve our fellow countrymen

Manoj Kumar
TGT-So.Sci.

DIGITAL PARENTING

'Digital technology' is a buzzing word in the present scenario,and the nowadays is more associated with parents as 'Digital Parenting'. It is appreciating that penetration of digital technology in our life has made lifestyle easy but on the flip side technology has been as an 'hindrance' by parents.

Children are seen preoccupied with mobiles, iphone and ipads, in which they are engrossed in playing digital games, messaging text, taking selfies, and sharing them in social medias. This has earned the wrath of parents as it is effecting the upbringing of children.

Thus ,circumstances are beyond the reach ,parents are now trying to find new gateways to tackle the problem. Incorporating 'Digital Parenting' as a part of your parenting can provide solution and enables parent to combat the problem.

This could be a little challenging for parents as they need to get update on applications in order to safeguard their tech- savvy child.

Here are few tips that help the parents in guiding children.

1. Interact with your child.
2. Update yourself technically.
3. Guide them on internet usage and implications.
4. Fix a time frame for usage .
5. Regulate digital habits and be a role model.
6. Deploy parental control applications.

'Digital parenting' is all about a small effort and little patience from parents that helps in building a healthy and friendly relationship with their children.

Durga S Kumbar
PRT

MENTAL WELLBEING DURING COVID 19

Life is full of difficulties,

Life is full of ambiguities,

Life is full of doldrums

But……

Life is full of opportunities also.

It took me long to decide the topic on which I should express my views, but as an when I see people around me or the news that come across all of us, I can sense a feeling of **deprivation** and **solitude** among many of us. Maintaining a proper mental and physical wellbeing in today's **rat race** has emerged as a major challenge for all of us especially **youths**. "Who could have ever thought that such an ***illustrious personality like Sushant Singh Rajput*** would hang himself to death, the man who was an **emblem of inspiration** for so many youths would have such a disastrous end".

All this calls out for a more **sympathetic approach** by all of us towards youths and our students especially during this **pandemic of Corona virus** which had left many of us **isolated and troglodyte**. All have got trapped inside the four walls reckoning for some **benefactor** who can understand their feelings. In today's world with adversity striking all aspects we need to overcome it and develop a ***resilience*** that will empower us to react properly notwithstanding **misfortune or nonappearance**.

The gist of my views emphasizes on the need to be more alert and calls out for sprinkling love and care especially during this pandemic. In other words, we all need to show **EMPATHY**.

E- Everybody need somebody

M – Model and Mirror

p- Put yourself in their shoes

A- Ask if you can help

T- Treat others the way you want to be treated

H- Heartfelt or Helpful

Y- You feel better and they feel better

With these words I want to put my pen down.

Thank you

VIKAS

PRIMARY TEACHER

GLISTENING GOKARNA

This scenic beauty, a grand temple town
Seated in the Arabian Sea like a golden crown
Bedecked on its bosom the blue beaches festoon
To name a few- Kudle, Paradise,Om and Half moon

Plays host to a galore of global tourists
Adventure enthusiasts and also motorists
Its a Sanskrit hub; has temples ancient opulent
Spirituality, Vedic chants have sprayed its sweet scent

The gracious mountains line the beaches pristine
Verdant vegetation like emerald has draped it green
Coconut fronds along the shores sway in gentle breeze
Colourful narrow streets and shacks to you please with ease

Savoring the magic of Sunrise and Sunset on the yellow sand
Makes you get lost in trance attaining bliss with its magic wand
In the twilight's crimson red a natural painting of the retreating birds…
And fishing boats dancing with waves cannot be explained with words!

Manyata.M.Mudigouda
Class:10th(B)

OH! NATURE

Oh! Beautiful is my mother nature
Forest's green and water's blue.
Sandy dunes and icy snow
It's my mother Natures view.

Chirping birds sing a song
In the blooming dawn
Blazing sun sparkles the day
As Creatures rejoice in the lawn

Leaping water, blossoming flowers
A crown of glory above your head
Glacial Mountains, swaying breeze
Dwell in Natures bed.

You embrace me in your arms
Knowledge's temple and heaven's gate
A happy life l enjoy with flesh and blood
In your floral my life accelerate

l sing l dance
somethings laugh and cry.
Like a star in the dark.
You twinkle in my sky.

Forest green, environment clean
Our life is barren without you.
It's your gift for healthly life.
This is entirely true….

Parth S Jatrate

CLASS – 10 A

Online Learning

There is no blackboard , but computer screen

Its online learning , that is everywhere seen

In the school campus , students no longer roam

With the modern gadgets they learn at home

No more tiffin , not needed school bus with peers or friends , they have none to discuss

However there is a partition wall is this education available to all

Those who can't afford computer and smart phone won't they feel they have been left alone.

Though it looks online education has shone ,

It has limitations many of its own

No doubt online learning is need of the hour

But can't match conventional teaching power

School facilities are replaced with online tools

Those who can't switch may become fools.

The pandemic has changed all existing rules

From offline has gone now online schools.

ANJALI MADHALE

CLASS 8A

The Proud Tree

There was a big tree in a ground. It was huge, with many branches spread all around and a large area was covered under it. People used to rest under it to avoid the hot rays of the sun. The tree was proud of its height and used to boast about it. It often looked down upon the smaller plants and grass that grew near it.

There was small grass grown next to the tree. The tree always made fun of the grass about its height. “You are so small…. You can’t even look at me properly.” You have to raise your head to look at me “ said the tree. The grass never replied to the tree.

One day, there was a storm. The tree started shaking vigorously. It could not hold on and got uprooted. The grass being very small was unaffected by the storm.

After a little while, the winds calmed down. The grass said “oh friend, I may not be as tall as you but I am safe and secure. I can hold on to myself. But I really feel sorry for you.”

The tree realized its mistake and begged for pardon.

Name :- Aditya P Joshi
Class:- 9th B

LIFE

Life is a opportunity , benefit from it..

Life is a beauty , admire it..

Life is a dream , realize it..

Life is a game ,

Play it..

Life is a promise ,

fulfill it..

Life is a sorrow ,

Overcome it..

Life is a song ,

Sing it..

Life is a struggle ,

Accept it..

Life is a tragedy ,

Confront it..

Life is a adventure ,

Dare it..

Life is a luck ,

Make it..

Life is too precious ,

Do not destroy it..

Life is life ,

fight for it..

Sneha Amarnath Dhumal

Class : 10th A

The poem

A poem is not only the expressing of feelings
But also
The expressing of thoughts...

A poem is not only motivational
But also
Inspirational...

A poem is not only writing word
But also
The rhyming word...

A poem is not only for giving you path
But also
gives you stairs to achieve the path...

The poem is not only for pleasure
But also
for teaching a great lesson...

A poem is not only the expressing of feelings
But also
The expressing of thoughts...

Deepanshu Yadav
Class- 8 A

What is life?

Something we live..

But just to live

Is not life..

Life has emotions

Both happy and sad

But just emotions

Is not life..

Success and failures

Is the way of life.

It makes life complete

But its just a way

Not life..

Love and respect

The main element of life

Makes us to lead life

But just this

Is not life

Then,

What is life?

We don't know

But we still live it

This question

Remains a question

That's why life is?

ISHURAJ

IX B

'Journey From Chalk to Pen'

Life starts with a first cry and 'school life' starts with a simple 'pen'. Writing about my experience right from nursery to my current grade IX has been the most memorable and best experience I have ever felt. It is said 'School shapes the future of the people'. From learning alphabets to studying literature there is lot of interesting things involved. From taking a small step of writing with a chalk on a slate to taking huge steps of writing with a pen on paper, our minds changed. Nursery, LKG and UKG were the pillars of our future building of education. These three grades that we passed through were the most significant and best ones which started from a chalk and next with a pencil.

We all found that we had created a fabulous bond with them. Pencils were a sort of an importance and we enjoyed the stage when pencils came into our lives. As the years passed by we were introduced to new thing called 'pen'. It was very different from a pencil because the problem that all could face was that we could erase whatever we had written with a pencil but here it was completely different as we couldn't erase whatever we had written with a pen. Right from the grade VI we were said to begin writing with a pen and it was kind of a new journey which we were going to begin.

In this journey of 'CHALKS TO PENS' our minds were set in a different way and we came through a lot of ups and downs, life taught us many lessons and learnt many things which we were unaware and unknown about. This journey is the one and only memorable one which anyone in this world could ever imagine and get in his/her life. Right from the beginning to now this journey says and makes it all about our future life and hence we will never forget this as each one of them from whom we came through played an important role in this journey whether it was our great and fabulous teachers or our parents, they made our lives better and brought it to a different level which, we couldn't even imagined of and helped during our chalks and pens, where chalks symbolise the kindergarten stage and pens symbolise our high school stage. Hence this 'CHALK to PEN' remains unforgettable in our minds.

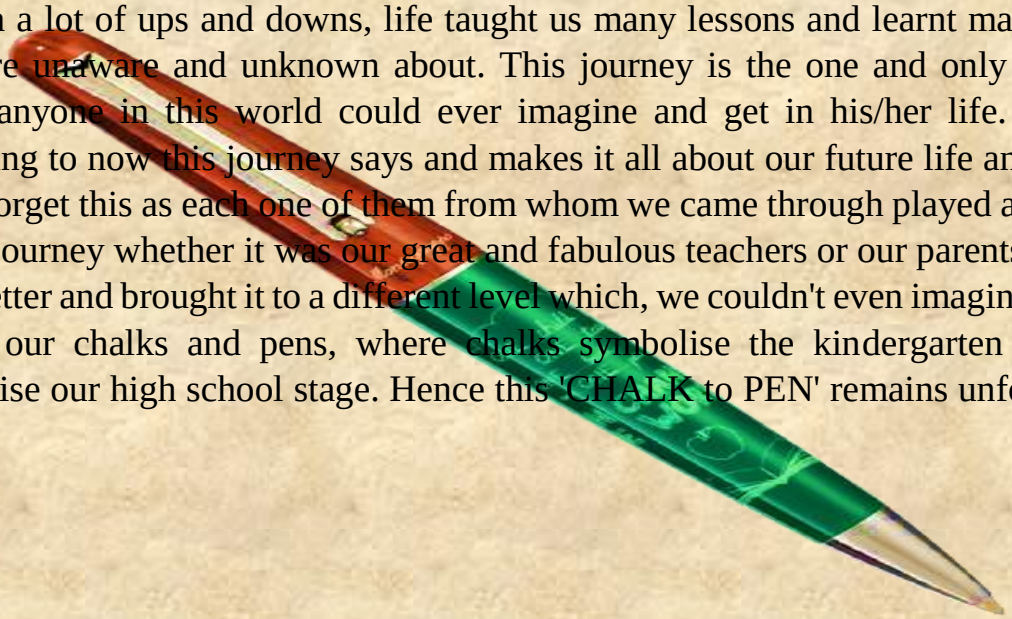

Chaitra. P. Kadole

IX A

THE BOY WHO CRIED WOLF

Once, there was a boy who became bored when he watched over the village sheep grazing on the hillside. To entertain himself, he sang out, “Wolf! Wolf! The wolf is chasing the sheep!”

When the villagers heard the cry, they came running up the hill to drive the wolf away. But, when they arrived, they saw no wolf. The boy was amused when seeing their angry faces.

“Don’t scream wolf, boy,” warned the villagers, “when there is no wolf!” They angrily went back down the hill.

Later, the shepherd boy cried out once again, “Wolf! Wolf! The wolf is chasing the sheep!” To his amusement, he looked on as the villagers came running up the hill to scare the wolf away.

As they saw there was no wolf, they said strictly, “Save your frightened cry for when there really is a wolf! Don’t cry ‘wolf’ when there is no wolf!” But the boy grinned at their words while they walked grumbling down the hill once more.

Later, the boy saw a real wolf sneaking around his flock. Alarmed, he jumped on his feet and cried out as loud as he could, “Wolf! Wolf!” But the villagers thought he was fooling them again, and so they didn’t come to help.

At sunset, the villagers went looking for the boy who hadn’t returned with their sheep. When they went up the hill, they found him weeping.

“There really was a wolf here! The flock is gone! I cried out, ‘Wolf!’ but you didn’t come,” he wailed.

An old man went to comfort the boy. As he put his arm around him, he said, “Nobody believes a liar, even when he is telling the truth!”

The Moral

Lying breaks trust — even if you’re telling the truth, no one believes a liar.

Ishuraj

IX B

Days during Covid 19

The corona pandemic has brought a sea change in the lives of children like me. Though we have started adapting

to online education and celebrating different occassions through the virtual mode,we are really missing the physical activities and mingling and playing with friends and teachers at school.

I sometimes feel bored being confined to home for such a long time. When i see and hear flocks of birds chirping, flying and playing outside,i again dream of playing, singing and enjoying with my friends at school.

My parents help me to keep myself lively and engaged all the time by teaching me new games like chess. I also have started learning to play badminton with my mother.

I am very grateful to all my teachers for keeping children like me engaged and teaching new things everyday and keep us smiling.

I pray and dream for a corona free world as soon as possible so that i can be back to school and enjoy learning and playing with teachers and friends.

Parvathy B

Class 3A

Memories of my school.

Beautiful memories are
Wonderful things,
They last till the longest day
They never wear out
They never get lost
And can never be given away
To some, it may be forgotten
To some, it is past
But to me who used to love her school
It's memories that will always last
Kendriya vidyalaya
You are
In my very blood
You filled my heart and my mind
No matter where I go
Near or far
People say," She's from Kendriya Vidyalaya.
When I will leave the school
I"ll take with me
The spirit that I have picked up here
Over land and sea!!!
I'll show the world by word and deed
That I have been trained and educated
In Kendriya Vidyalaya!!!

Anagha R. Pawar
X 'A'

Commonsense is word which is not found in books

It's that when we walk in garden people ask that are you waking it's so funny .

Commonsense is that which come from birth

it's that to when we write people ask that are you writting it's so funny .

Commonsense is a gift from God.

Its that when we play and people ask are you playing it's so funny

Commonsense has very person

It's that to when we study was people ask that are you studying it's so funny

Prathamesh, 8A

MOTHER

What is the mean of the word MOTHER?

She is the one who can't be compared with other.

She teaches us how to face every bother.

And she is the one who called MOTHER.

She dreams to see us like flying birds.

With full of her eyes with tears.

She has been our backbone from years.

Can we price her just with these words.

She never shows us her pain.

She always wants to see us gain.

Even in her lots of strain.

She always gives us her priceless sain.

She is statue of patience.

She is the book of guidence.

Before feeling her absence.

We should celebrate her presence.

Oh! MOTHER YOU ARE THE WORLD TO ME!

MOTHER IS THE PRECIOUS WORD TO ME!

SHREERAKSHA .S.ARABHAVI

CLASS : 8TH 'A'

A Little Friend

That was a bad day for our Mr. Lion King. During his chase to catch a rabbit he sprang into a small bush from where he came out not with the rabbit but with a large thorn in his palm.

He cried for help. He tried to pull out the thorn. He shook his hand, tried to pull out the thorn with his mouth etc. But all his efforts was in vain. The thorn began to smile at Mr. Lion.

Then he asked other animals for help. But they all feared the loin. So no animal came to help him.

At last the lion approached the clever fox. The king asked, Can you out the thorn please. I am suffering very much with pain."

The fox said, I am not very expert in this task. But I have a little friend who is very expert in this work. I will surely ask him to help you. But I have some demands."

What are your demands?" asked the king.

It is not just food or money Your Majesty! You should allow me to give you five kicks on your back!" the fox said.

The lion king asked with surprise and anger Do you want to kick me? Don't you know who I am?"

I know! I know! But it is not my need to remove thorn from your palm. If you don't want I am going. Good Bye" said the fox.

Hey! Wait! Wait!" said the lion and he began to think for a moment I am suffering with the pain of the thorn. It has to be pulled out. Let him kick me five times. I just want to remove the thorn. After taking the thorn I will eat up his little friend."

The fox then began to kick the Lion King with his permission. One, two, three like that. The fox called his little friend.

There comes a little porcupine. He pulled out the thorn with great ease. The pain in the palm of the lion was reduced. But his mind became filled with anger, grief and disappointed. What to say! He was very much disappointed in thinking how he can he eat the porcupine with thousands of quills? At last he had to bow down before the great intelligence of the clever fox.

Shashidhar R HIttalamani
Class: 9B

!DON'T GIVE UP!

Don't give up and don't give in
It's all in the lord's Hands
No matter what your Facing
He is the one who can.
In any situation

His grace can turn It Around
So you can be victorious
As his love does Abound.
The begining and the End he knows
And all that's In between
So put your total trust In him
To him It's all foreseen.

He knows about your struggles
He knows about your pain
Your hardships and your surrows
And he will help you to reign.

Soo don't give up and don't give in
Don't quit before it's time
God's grace will give you power
To make it to the finish line
In his own way and time!!!

Tejashwini Dabbanwar
8 ‘B’

ART GALLERY

CYBERSECURITY
INTERNET DESIGNED to CONNECT...
... NOT PROTECT
INSPIRE OTHERS TO FIGHT for Safety
Equality and Safety
Look at SECURITY Holistically
SECURITY STARTS with YOU
HELP: Make the INTERNET Safer!
MORE JOBS TO FILL
PROTECT from HARM in the REAL WORLD
SECURITY is a JOURNEY
BUILD BRIDGES across DISCIPLINES
THINK LIKE an ADVERSARY
AND PRIVACY

ISHURAJ

SAVE WATER
SAVE NATURE

SCENERY DRAWING
Nome - Adarsh.S.
6th 'A' Roll no - 17
k.V. Chikodi.

SANSKAR

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु
गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात परब्रह्म
तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
गुरू पौर्णिमा
23 जुलै 2021
नेत्रा कुदले
केंद्रिय विद्यालय, चिकोडी
3 'ब'

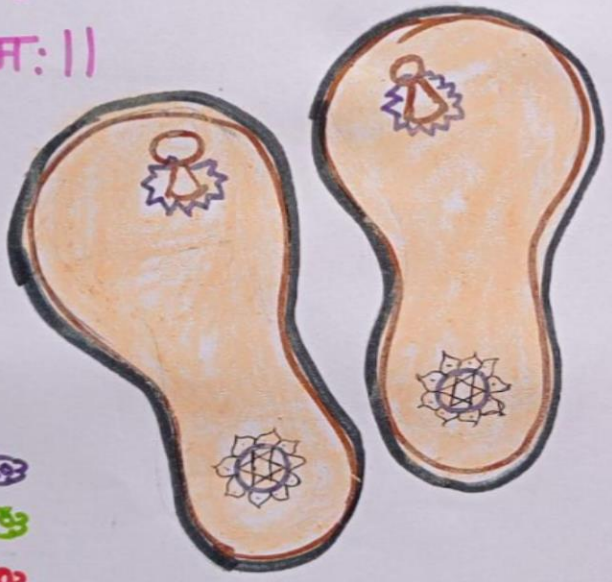

गुरु
A GUIDE, a MENTOR and a PHILOSOPHER
A GURU is an ensemble of all.
Happy Guru Purnima
अभिनव कुदले
केंद्रिय विद्यालय चिक्कोडी
3 'ब'
MI NOTE 9

NAME - MANGSULE JANHVI JAYRAM class → 3rd A

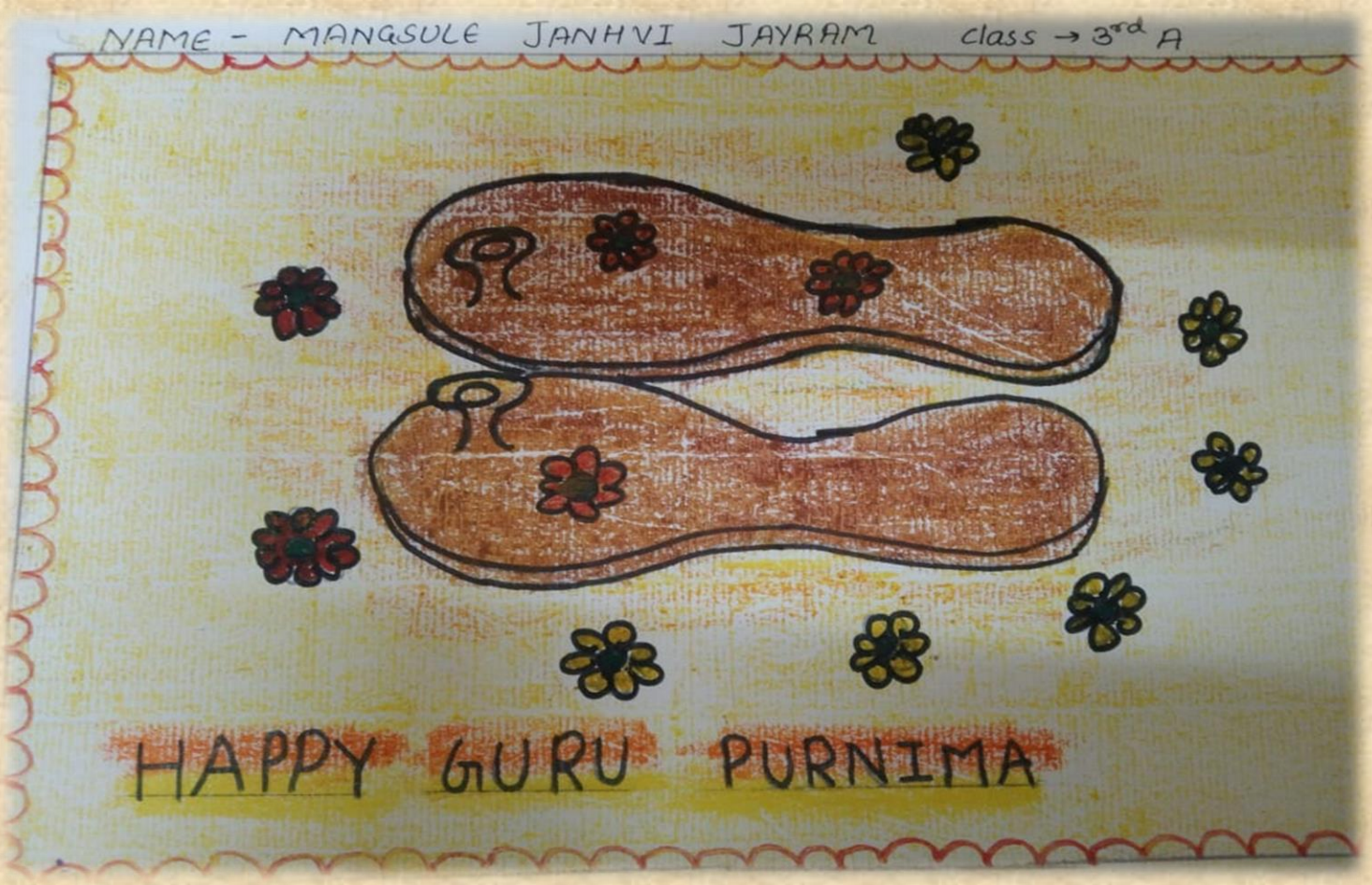

BODY IS OUR
TEMPLE,
KEEP IT
CLEAN AND SAFE
WITH
YOGA!!
Disha Kadapatti
X 'B'

Name :- Sneha Amarnath
Dhumal .
class :- 10th A .....

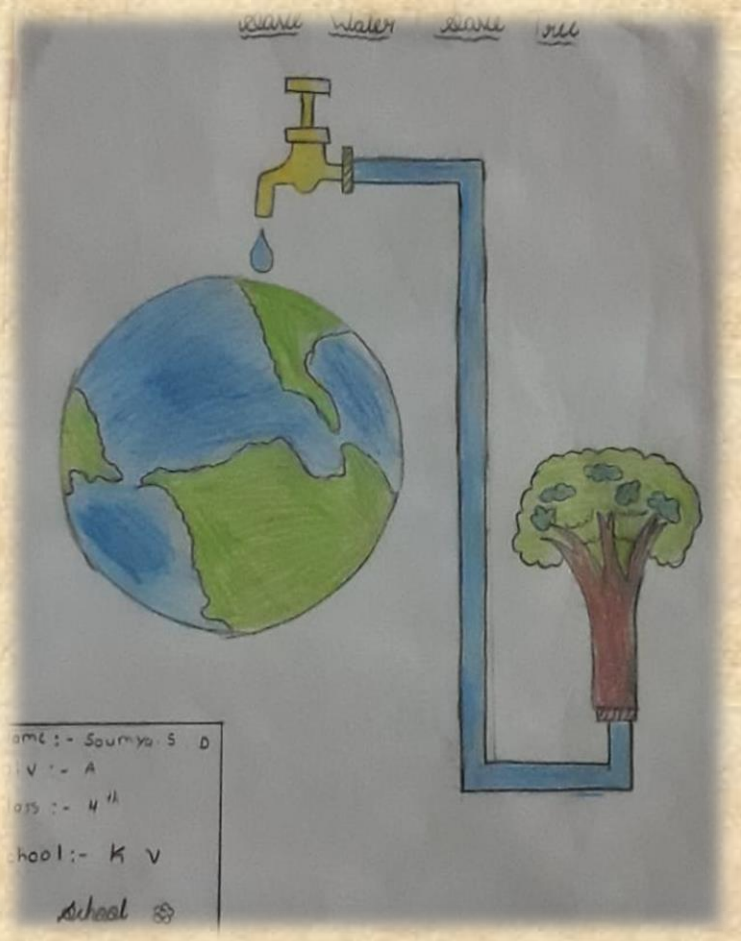

6th A R no - 30

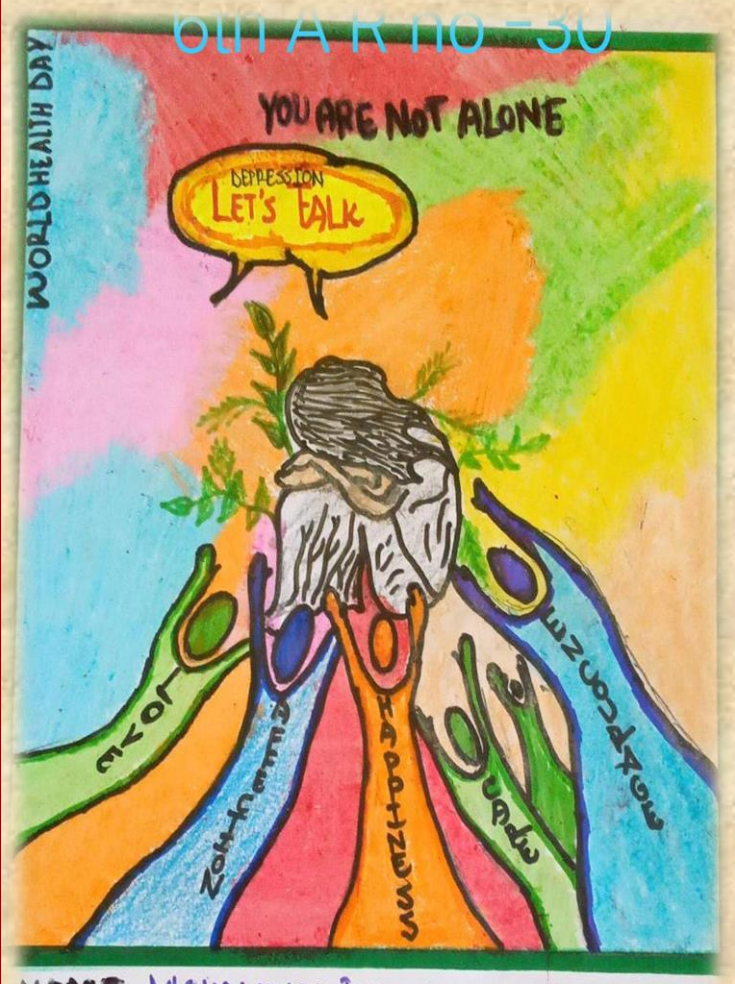

NAME:- MOHAMMAD JHTESHAM .A. HUNGUND

SANSKAR

Jai Shree
Ram
Inchara DS
IV B

HAPPY
RAM NAVAMI

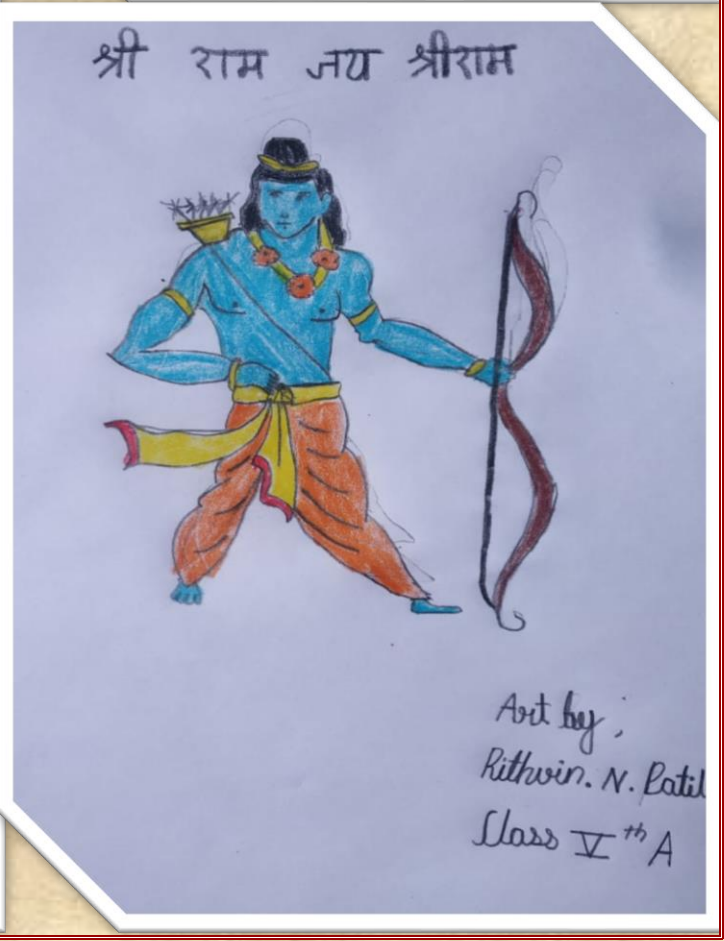
श्री राम जय श्रीराम
Art by ;
Rithvin. N. Patil
Class V th A

WORLD EARTH DAY
22 APRIL
SAVE EARTH
PLANT A TREE
Samiksha
totiger
V th A

AIR
LAND
WATER
ANIMALS
POORVI V AMRITSAMMANNAVAR
KVC 2B ROLL NO

SAVE TREE
SAVE EARTH
PRASHANT S.H.
II nd A

SAVE WATER
PLANT IN
POLLUTION OUT

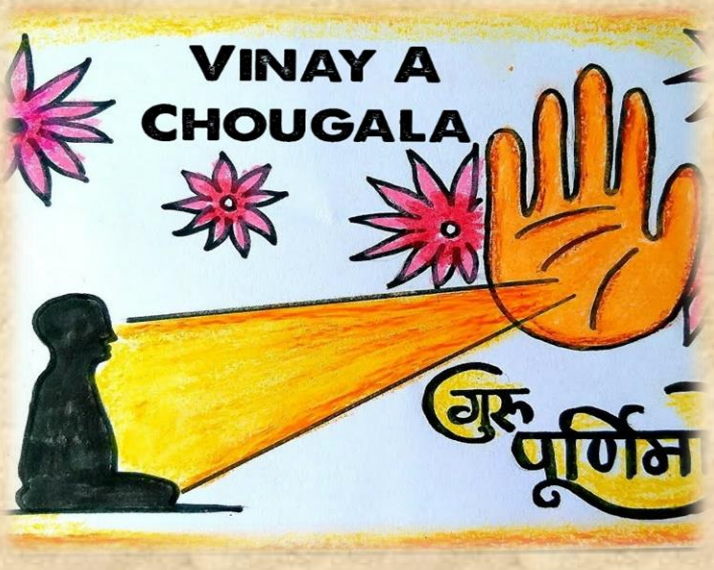

VINAY A
CHOUGALA
गुरु
पूर्णिम

गुरु पौर्णिमा की शुभकामनाए ....
23-07-2021
नेत्रा कुदले
3 'B'
केंद्रिय विद्यालय.चिकोडी

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पायं।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताए॥
ॐ
गुरु पूर्णिमा
आरव प्रजापति
1 'ब'

GREEN
AND
CLEAN EARTH
WILL BLESS
YOU WITH
A Longer Life
SAY
NO
USE
ME
NAME: Roohianjum .P. Makan
CLASS: VI B
Roll.no.= 10

DEEPANSHU YADAV

DEEPANSHU YADAV

In future,
Like a bird
you can fly, if
you stay Home!
Yojit (I-A)
KV
CHIKODI

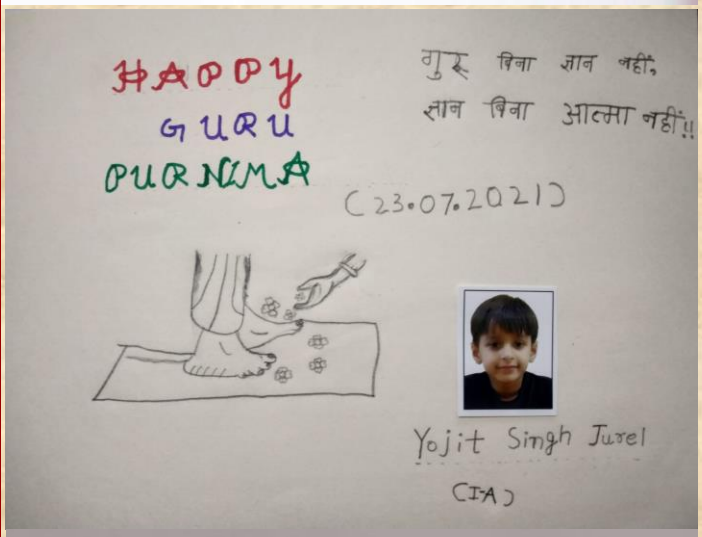

HAPPY
GURU
PURNIMA
गुरु बिना ज्ञान नहीं,
ज्ञान बिना आत्मा नहीं!!
(23.07.2021)
Yojit Singh Jurel
(I-A)

KRUTHIK
M
MULAGUND
1st std
HAPPY
GURU
PURNIMA
SIR

EARTH DAY
SAVE WATER
SAVE TREES
Praveen. S.H VIth B

—Sneha Amarnath Dhumal
class- 10th 'A'

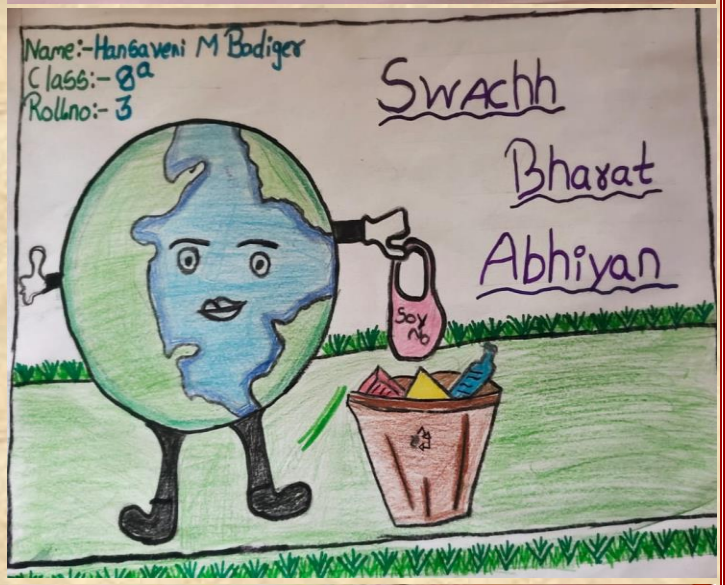

Name:-Hangaveni M Badiger
Class:-8a
Rollno:-3
Swachh Bharat Abhiyan

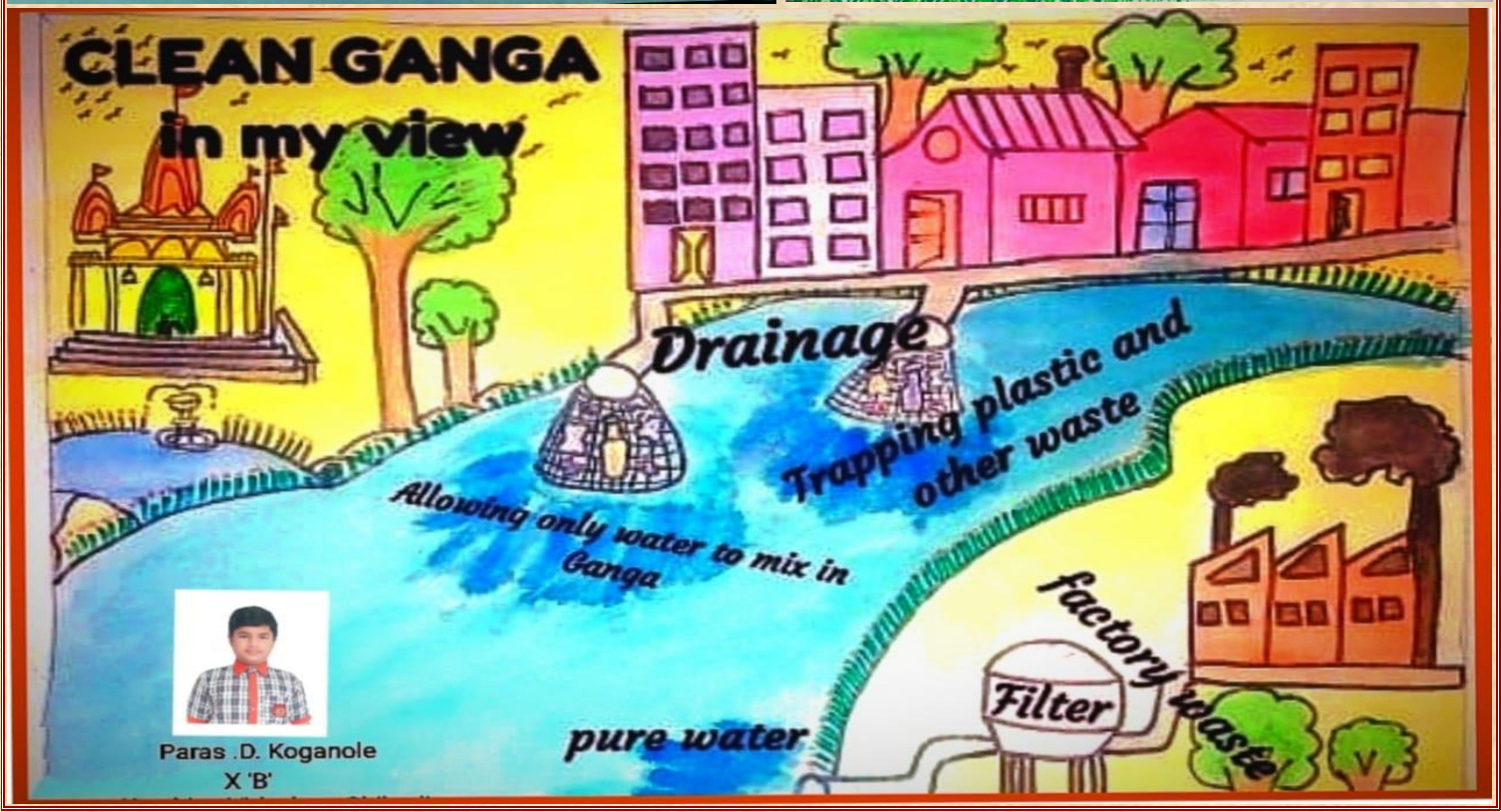

CLEAN GANGA in my view
Drainage
Trapping plastic and other waste
Allowing only water to mix in Ganga
factory waste
Filter
pure water
Paras .D. Koganole
X 'B'

Save earth from coronavirus
HAPPY Earth day
krutika.A.Pargoud
cla-5 A

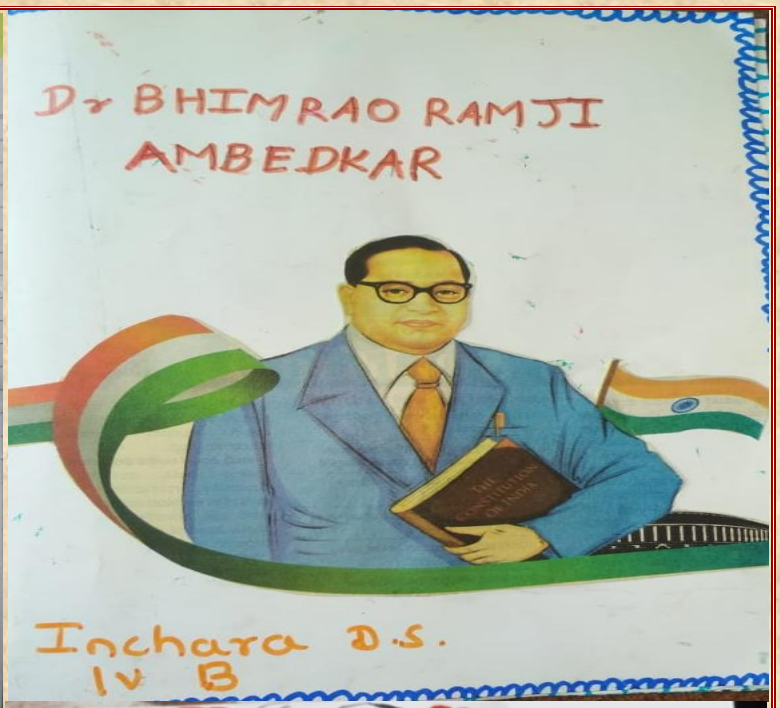

Dr BHIMRAO RAMJI AMBEDKAR
Inchara D.S.
IV B

Mom and Dad
art by:-
Darshan

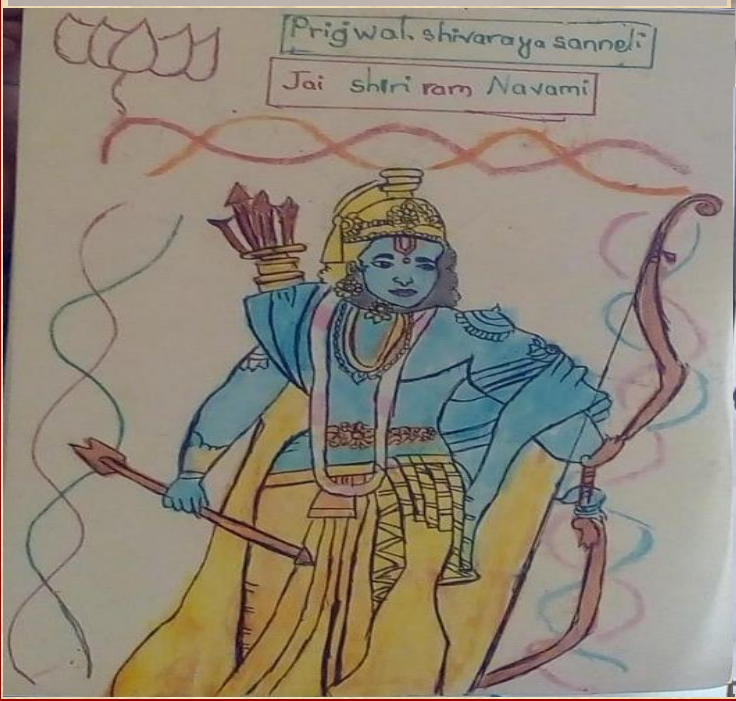

Prigwal. shivaraya sanneli
Jai shri ram Navami

Happy Ramnavami
Name-Darshan S. madde
Class-4 A
School. K.V. chikodi

मेरा भारत
भारत मेरा प्यारा देश,
सब देशो से न्यारा देश।
हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई,
मिलकर रहते सिख-ईसाई।
भारत प्यारा देश हमारा।।
सारे जग से शान निराली,
कण-कण में छाई हरियाली।
गंगा, यमुना इसकी शान,
जग में इसकी संस्कृति महान।
भारत प्यारा देश हमारा।।
Name - Adarsh. S. Madde.
Roll no - 17
Class - 6th 'A'
School - K. V. Chikodi

Krishna and Radha

"हमको अपने मातृभूमि से बेहद प्यार है"
हमको अपने मातृभूमि से बेहद प्यार है।
यह जन्मभूमि, यह कर्मभूमि, यह अपनी पहचान है,
जो न करे सम्मान इसका, उसका जीना बेकार है,
हमको अपने मातृभूमि से बेहद प्यार है।
दिवानों की दिवानगी में, भारत इसका नाम है,
इसकी सीमा रक्षा हेतु, जीवन अपना कुर्बान है,
हमको अपनी मातृभूमि से बेहद प्यार है।
इसकी ओर उठी हर बुरी नजर को, वीरों ने हम बार झुकाया है,
हर जीत के बाद लहराता, तिरंगा जिसका शान है,
हमको अपने मातृभूमि से बेहद प्यार है।
इसके सम्मान को कभी कोई न कम कर पाया है,
बढ़ते हुए दुश्मनों के दल को, वीरों ने मार भगाया है,
हमको अपने मातृभूमि से बेहद प्यार है।
आजाद, भगत, बोस जैसे युवा, इस देश की पहचान है,
इनके जीवन से प्रेरित, हर भारतवासी महान है,
हमको अपने मातृभूमि से बेहद प्यार है।
जय हिन्द, जय भारत
भारत
NAME :- Shafiyanikhat. P. Makandar
CLASS :- VIIIth-B
Roll.no :- 14

Happy Guru Purnima

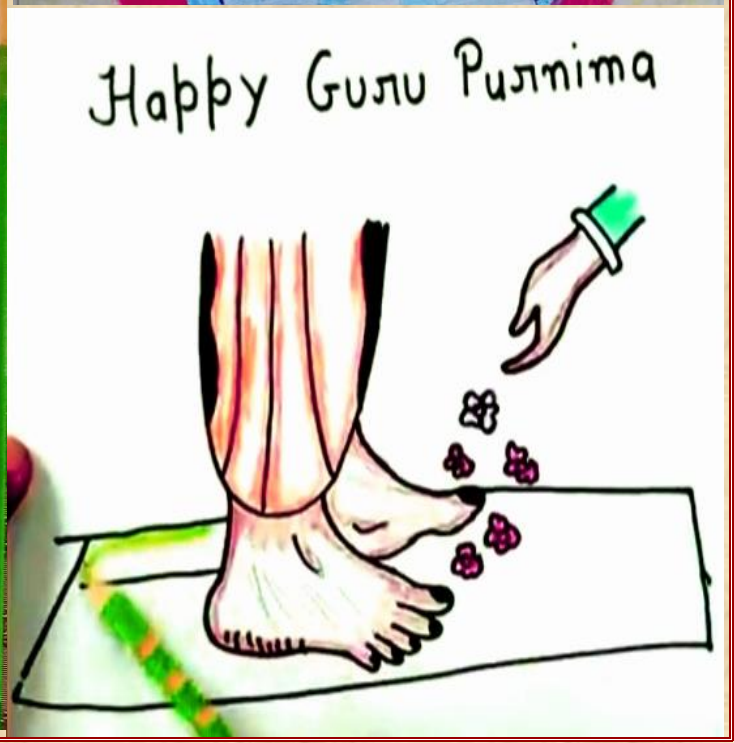

आजादी

पंछी है कैद अगर,
तो उड़ने में कर मदद तू।
रात है काली अगर,
दिया जला कर रौशन कर तू।
बीत गए कई साल रूढ़िवादी विचारों में अलझ कर,
सुलझा मन के भाव तू।
औरत, आदमी या हो कोई बच्चा,
सबके जीवन का कर सम्मान तू।
तोड़ दे दीवारें सारी,
आगे बढ़ विजई राह पर
उन वीरों ने क्या पाया,
अगर तू अब भी डर में खोया।
उठ जा तू, छू ले आसमान,
आज़ाद पंछी है सबका हक

Roll no = 10
Class = 6B
NAME = Roohianjum .P. Makandar

प्रकृति

हरियाली की चूनर ओढ़े,
यौवन का श्रृंगार किया।

वन-वन डाले, उपवन डोले,
वर्षा की फुहार लिया।

कभी इतराती, कभी बलखाती,
मौसम की बराह लिया।

स्वर्ण रश्मि के गहने पहने,
होंठो पर मुस्कान लिया।

आई है प्रकृति धरती पर,
अनुपम सौन्दर्य का उपहार लिया।

- समिक्षा बड़वे

शिक्षक का महत्व

प्राची काल से ही भारतीय संस्कृति में गुरु को 'गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु ही शंकर है, गुरु ही साक्षात परब्रह्मा है"। गुरु को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। हमारे जीवन मे शिक्षक का बड़ा स्थान है शिक्षक के लीए एक विद्यार्थी कोरे कागज की तरह होती है। जिसको किसी भी प्रकार से ढाल सकता है एक शिक्षक के प्रशिक्षण के द्वारा हममें से कई लोग वकील, डॉक्टर, अधिकारी या सेनीक या कोइ वेज्ञानिक बनता है। आज इस कठीन समय मेंभी हमारे शिक्षको से हमें अकेला नही छोडा हमे ऑनलाइन शिक्षा दी। मुझे एक अच्छी विद्यार्थी बनाने के लिए आप सब शिक्षको का धन्यवाद...।

Name - Pareentaj Makandar
Class - IX B

Art by: Sanvi Kadam
3A
गुरु पूर्णिमा

DRAWING
NAME:- Tanmashree M. Patil
CLASS:- 6th-B
ROLL:- 19

SCHOOL
School
STAY HOME
STAY SAFE

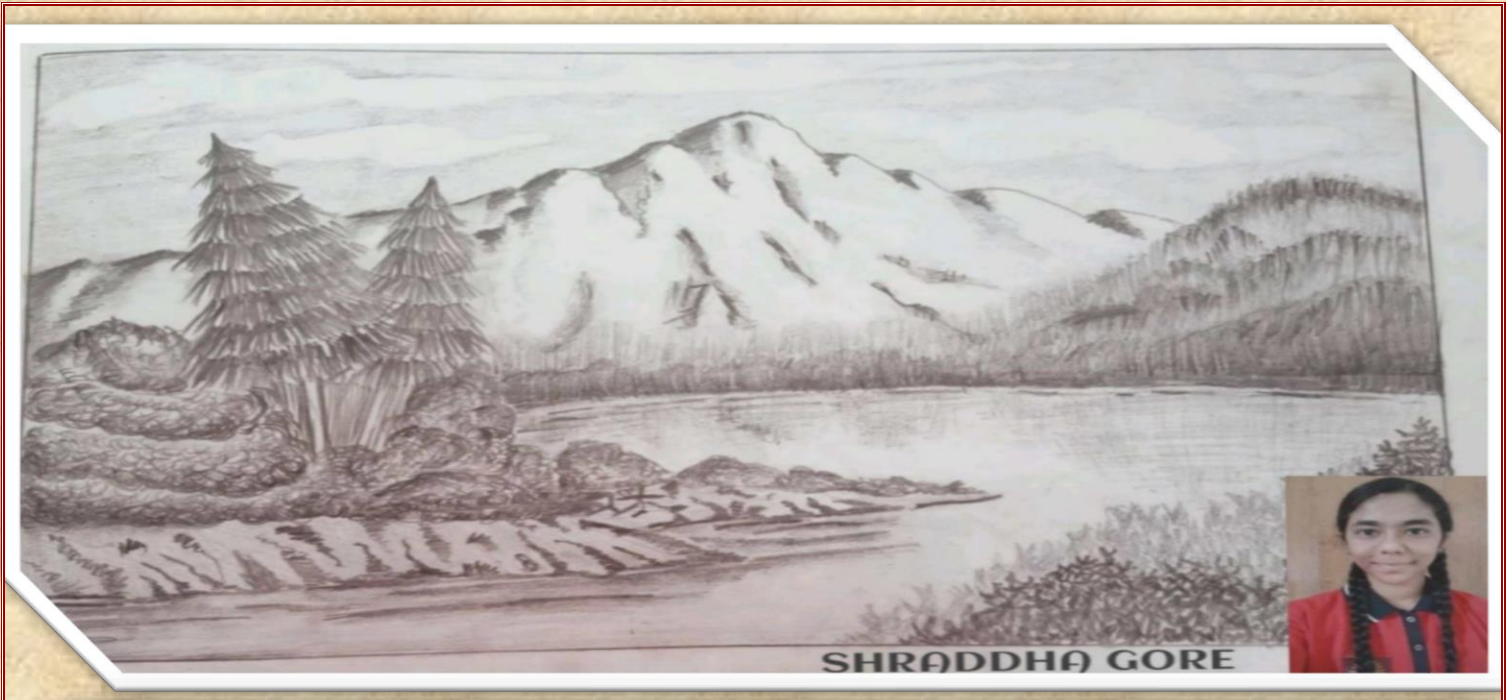
SHRADDHA GORE

Small
Tiger
SHRADDHA GORE

उत्तराखंड पर निबंध

नाम - अपूर्व
कक्षा - VI B

उत्तराखंड भारत में स्थित एक राज्य है। भारत देश को उत्तर और दक्षिण भारत दो हिस्सों में बांटा जा सकता है। यह उत्तर भारत में स्थित एक राज्य है। भारत गणराज्य के सत्ताइसवें राज्य के रूप में किया गया था। राज्य की सीमाएं उत्तर में तिब्बत और पूर्व में नेपाल से लगी हैं। पश्चिम में हिमाचल प्रदेश और दक्षिण में उत्तर प्रदेश इसकी सीमा से लगे राज्य हैं। उत्तराखण्ड, हिमालय श्रृंखला की दक्षिणी ढलान पर स्थित है और यहां मौसम और वनस्पति में ऊँचाई के साथ-२ बहुत परिवर्तन होता है, जहाँ सबसे ऊँचाई पर हिमनद से लेकर निचले स्थानों पर उपोष्णकटिबंधीय वन हैं। सबसे ऊँचे उठे स्थल हिम और पत्थरों ढके हुए हैं। सन 2000 से 2006 तक यह उत्तरांचल के नाम से जाना जाता था। जनवरी 2006 में स्थानीय लोगों की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए राज्य का आधिकारिक नाम बदलकर उत्तराखंड कर दिया गया। [उत्तराखण्ड की स्थापना 9 नवंबर 2000 को हुई थी।

FITNESS BEATS PANDEMIC

POEM

Our carefully-crafted illusion
of predictable security
destroyed by a simple virus.
We watch as the well-oiled gears
of our elaborate world machine
grind to a shuddering halt.
An invisible enemy
illuminates hidden lines
of our interdependence.
Eerie silence prowls empty streets.
Enforced isolation teaching us
just how much we need each others.

NAME - APURVA CLASS-VI B

Name :-
Class :- 8th B
Roll no :- 05

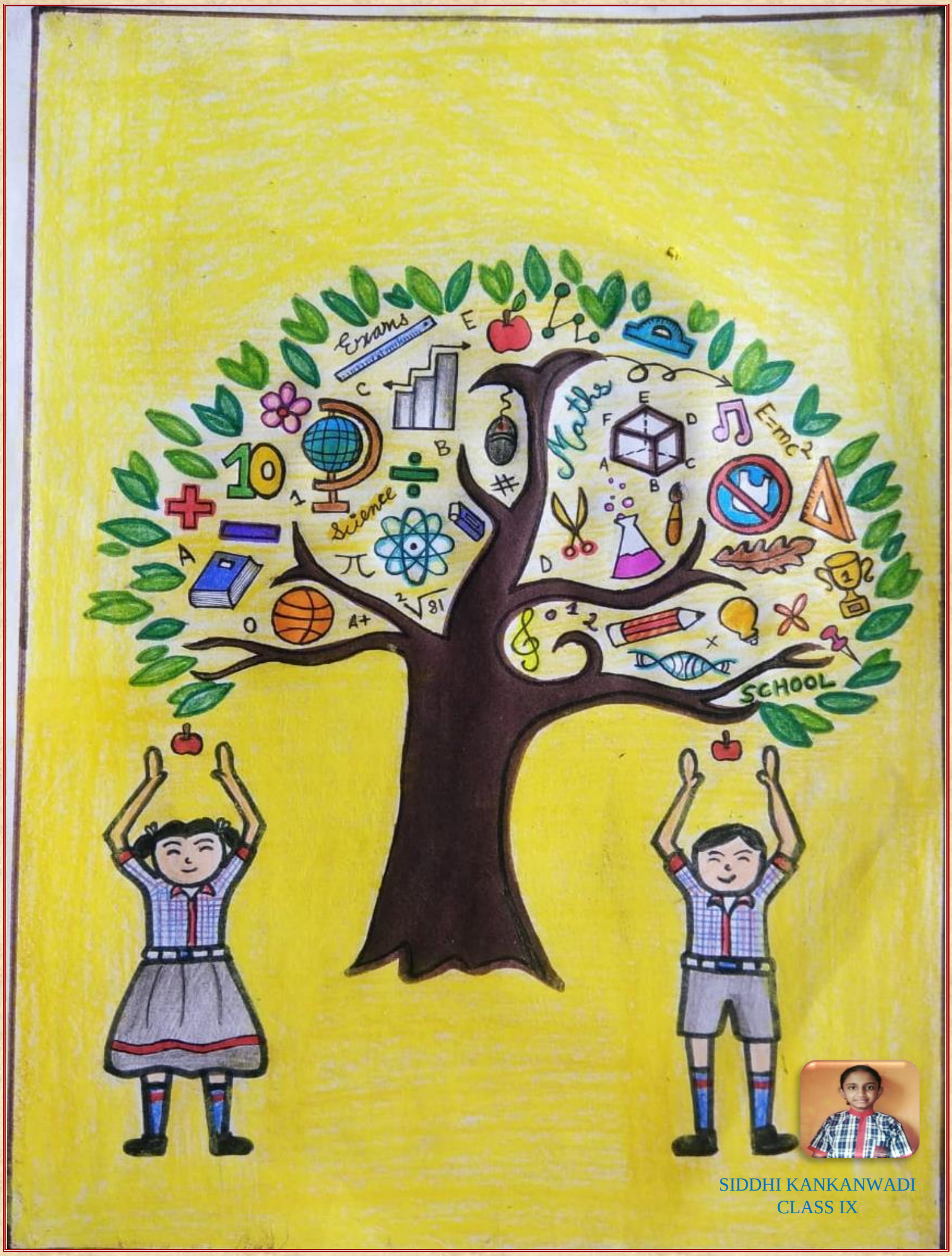

SIDDHI KANKANWADI
CLASS IX

धन्यवाद